सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 02, अंक 205, नई दिल्ली । शुक्रवार, 04 अक्टूबर 2024, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

अगर भाग्य पर भरोसा है तो जो तकदीर में लिखा है वही पाओगे, और अगर खुद पर भरोसा है तो जो चाहोगे वही पाओगे।

03 दिग्गजों की मौजूदगी में सम्पन्न हुआ महात्मा गांधी एक्सीलैंस अवॉर्ड
06 भारतीय छात्र यूरोप में आईटी, फार्मा और फैशन पाठ्यक्रम क्यों चुन रहे हैं?
08 महिलाओं को सशक्त करके आगे बढ़ाएंगे–ममता मोदानी

दिल्ली में इलेक्ट्रिक टैक्सी वाले परिवहन विभाग के आला अधिकारी की राजस्व इजाफा नीति के हुए शिकार

संजय बाटला

नई दिल्ली। दिल्ली टैक्सी एंड टूरिस्ट ट्रांसपोर्ट्स एसोसिएशन ने 500 से ज्यादा इलेक्ट्रिक टैक्सी की फिटनेस ना होने की शिकायत दिल्ली विशेष परिवहन आयुक्त शहजाद आलम से करी।

टैक्सी एसोसिएशन के अध्यक्ष ने विशेष परिवहन आयुक्त को बताया की हमारे यूनियन के सदस्यों ने जब इलेक्ट्रिक टैक्सीयों को ख़रीदा था तब दिल्ली सरकार और परिवहन विभाग द्वारा विज्ञापनों के माध्यम सहित सभी इलेक्ट्रिक वाहनों पर रजिस्ट्रेशन फीस और टैक्स माफ की घोषणाएं थी और यह शायद दिल्ली सरकार और परिवहन विभाग की मिली जुली प्रदूषण की आड़ में इलेक्ट्रिक गाड़ियों को बिकवाने की चाल थी. मात्र 1 - 2 साल में ही परिवहन विभाग द्वारा रोड टैक्स लेना शुरू कर दिया गया। यहां जानने योग्य बात यह है की जिस ने अपना इलेक्ट्रिक वाहन उस समय खरीदा जिस समय दिल्ली परिवहन विभाग और दिल्ली सरकार द्वारा टैक्स माफ की घोषणाएं थी तो किस आधार/ नियम के तहत उन इलेक्ट्रिक टैक्सीयों के मालिकों से पुराना रोड टैक्स वह भी जुर्माने के साथ भरने का दबाब डाला जा रहा है। परिवहन विभाग/ दिल्ली सरकार द्वारा घोषित माफ़ किया हुआ समय का रोड टैक्स इलेक्ट्रिक टैक्सी वालो ने नहीं भरा हुआ इस वजह से दिल्ली की लगभग 500 से अधिक इलेक्ट्रिक टैक्सीयां बगैर फिटनेस के पार्किंग में खड़ी है। दिल्ली सरकार के पर्यावरण मंत्री गोपाल राय प्रदूषण की आड़ में डीजल गाड़ियों को बंद करने की कोशिश कर ही रहें है और इलेक्ट्रिक टैक्सीयां वालो को परिवहन विभाग परेशान कर खड़ा रखवा रहा है। एसोसिएशन ने कहा है की अगर हमारी टैक्सीयों की जल्दी फिटनेस शुरू नहीं की गई तो वह दिल्ली परिवहन विभाग/दिल्ली सरकार के खिलाफ भारी प्रदर्शन करेंगे। साथ ही कहा की पहले से हीं दिल्ली सरकार और परिवहन विभाग पेनिक बटन, स्पीड गवर्नर और हाई सिक्योरिटी नंबर प्लेट घोटाले से दिल्ली के टैक्सी/ बसों के मालिको को का मानसिक और आर्थिक शोषण कर रहा है जिसके खिलाफ़ शिकायत और प्रदर्शन जारी है. अंत में कहा हमारी शिकायतों पर जल्द ही कोई कार्यवाही नहीं हुई तो इसका असर दिल्ली के चुनाव पर भी होगा।

सरकार ने मोटर वाहन अधिनियम में बदलाव का रखा प्रस्ताव, दुर्घटना दावों के लिए 12 महीने की समय-सीमा

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। सड़क परिवहन मंत्रालय ने मोटर वाहन अधिनियम में महत्वपूर्ण संशोधनों का प्रस्ताव दिया है। जिसमें मोटर दुर्घटना दावा न्यायाधिकरण (एमएसीटी) को दावों के समाधान के लिए 12 महीने की समय-सीमा देना और मोटरसाइकिलों को कॉन्ट्रैक्ट कैरिज (अनुबंध गाड़ी) के तहत शामिल करके उनके व्यावसायिक इस्तेमाल की अनुमति देना शामिल है। इसमें रैपिडो और उबर जैसे एग्रीगेटर्स द्वारा उनके उपयोग की अनुमति देना भी शामिल है।

कॉन्ट्रैक्ट कैरिज का मतलब यात्रियों को ले जाने के लिए किराए पर लिए गए वाहन हैं। जबकि मौजूदा कानून कॉन्ट्रैक्ट कैरिज के तहत सभी वाहनों के इस्तेमाल की अनुमति देता है। वहीं, प्रस्तावित संशोधन का मकसद मोटरसाइकिलों के संबंध में कानूनी स्पष्टता प्रदान करना है।

मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक, यह कुछ राज्यों द्वारा राइड-हेलिंग सर्विस के लिए दोपहिया वाहनों के इस्तेमाल को प्रतिबंधित करने के मद्देनजर किया गया है। इसके अलावा, मंत्रालय यात्री सुरक्षा

को बढ़ाने पर ध्यान केंद्रित करते हुए मोटरसाइकिलों को शामिल करने के लिए 'कैब एग्रीगेटर्स गाइडलाइंस' को संशोधित कर रहा है।

संसद के शीतकालीन सत्र में पेश किए जाने वाले 67 प्रस्तावित संशोधनों में 'शैक्षणिक संस्थानों की बसों' की नई परिभाषा और हल्के मोटर वाहनों (एलएमवी) को उनके सकल भार (ग्रॉस वेट) के आधार पर वर्गीकृत करने का प्रस्ताव शामिल है। पहली बार, तिपहिया वाहनों की परिभाषा भी सुझाई गई है। ये बदलाव सुप्रीम कोर्ट के एक मामले के बाद किए गए हैं।

एक प्रमुख संशोधन में 'शैक्षणिक संस्थान बस' को किसी भी वाहन के रूप में फिर से परिभाषित करने की कोशिश की गई है। जिसमें चालक को छोड़कर छह से ज्यादा व्यक्ति होते हैं, जो छात्रों और कर्मचारियों के परिवहन के लिए संस्थान द्वारा स्वामित्व में, लीज पर या किराए पर लिया जाता है। मंत्रालय ने ड्राइवरों और नियोक्ताओं की जवाबदेही बढ़ाने के लिए ऐसी बसों द्वारा किए गए ट्रैफिक उल्लंघन के लिए दंड को दोगुना करने का भी प्रस्ताव किया है।

सरकार सुप्रीम कोर्ट को दिए गए आश्वासन को पूरा करने के लिए शीघ्र संसदीय मंजूरी के लिए दबाव बना रही है। जो इस बात की जांच कर रहा है कि क्या हल्के वाहन लाइसेंस वाला व्यक्ति 7,500 किलोग्राम तक के भार रहित परिवहन वाहन को चला सकता है। जिसे 'माल हल्के मोटर वाहन' के रूप में जाना जाता है।

एक अन्य प्रस्तावित संशोधन राज्यों को कैब एग्रीगेटर्स, ऑटोमेटेड टेस्ट स्टेशनों (एटीएस) और 'मान्यता प्राप्त ड्राइवर प्रशिक्षण केंद्रों' के लिए अनुमोदन प्रक्रिया में तेजी लाने के लिए प्रोत्साहित करेगा। जिसके लिए आवेदन जमा करने के छह महीने के भीतर फैसला लेना आवश्यक होगा। अगर राज्य इस समय सीमा के भीतर कार्रवाई करने में नाकाम रहते हैं, तो केंद्र सरकार के दिशा-निर्देशों को प्राथमिकता दी जाएगी।

उपराज्यपाल आवास के पास पूर्व बस मार्शल्स का प्रदर्शन
मंत्री सौरभ भारद्वाज सहित कई विधायक डिटेन

संजय बाटला

प्रदर्शन को आम आदमी पार्टी ने अपना समर्थन दिया। इस बीच दिल्ली पुलिस द्वारा कैबिनेट मंत्री सौरभ भारद्वाज और कई विधायकों को डिटेन कर लिया गया है।

नई दिल्ली। नौकरी बहाली की मांग को लेकर चंदगी राम अखाड़ा चौराहे पर विरोध प्रदर्शन करने के लिए जुटे बस मार्शलों के समर्थन में तीन मंत्रियों समेत आम आदमी पार्टी (आप) के कई विधायक भी गुरुवार देर रात पहुंच गए। इस दौरान बड़ी संख्या में प्रदर्शनकारियों के जुटने और हंगामा होने से पुलिस ने इनको तितर-बितर करने की कोशिश की। विरोध करने पर पुलिस ने तीनों मंत्रियों सहित कई आप विधायकों को हिरासत में ले लिया। सभी को लेकर पुलिस बुराड़ी पुलिस स्टेशन में पहुंची। मामला शांत होने के बाद थोड़ी देर में सभी को छोड़ दिया गया।

इससे पहले आप विधायकों के साथ मंत्री सौरभ भारद्वाज, इमरान हुसैन और मुकेश अहलावत चंदगी राम अखाड़ा चौराहे पहुंचे। यहां सौरभ भारद्वाज ने कहा कि हम अपनी दिल्ली सरकार को लेकर आ गए हैं। भाजपा को भी यहां आना चाहिए और अपने एलजी साहब से 10 हजार बस मार्शलों को बहाल करवाना चाहिए। यह लोग भी अपने परिवार के साथ खुशी-खुशी त्योहार मना सकें। एलजी जहां हस्ताक्षर करने के लिए कहेंगे, हम कर देंगे। हमें इन बस मार्शलों को फुटबॉल की तरह इधर-उधर नहीं घुमाना है। हम यहां झगड़ा करने नहीं आए हैं। 26 सितंबर को दिल्ली विधानसभा में तय हुआ था कि नवरात्र के पहले दिन 3 अक्टूबर को आम आदमी पार्टी और भाजपा के सारे विधायक और मंत्री एलजी साहब से मिलने जाएंगे।

दिल्ली के 5 लाख वाहनों का रजिस्ट्रेशन रद्द, इनके पास बचे हैं सिर्फ तीन ही विकल्प; वरना किए जाएंगे जब्त

परिवहन विशेष न्यूज

दिल्ली सरकार ने वायु प्रदूषण के खिलाफ अभियान तेज करते हुए 10 साल पुराने डीजल और 15 साल पुराने पेट्रोल के पांच लाख और वाहनों के पंजीकरण को रद्द कर दिया है। अब इन वाहनों के मालिकों के पास सिर्फ तीन ही विकल्प हैं – दूसरे राज्य में रजिस्ट्रेशन इलेक्ट्रिक में कन्वर्ट या स्क्रैप। इनमें से कोई भी विकल्प नहीं चुनने पर वाहन जब्त किए जाएंगे।

नई दिल्ली। वायु प्रदूषण के खिलाफ अभियान तेज करते हुए दिल्ली सरकार ने 10 साल पुराने डीजल और 15 साल पुराने पेट्रोल के पांच लाख और वाहनों के पंजीकरण को रद्द कर दिया है। इन्हें मिलाकर अब तक ऐसे वाहनों की संख्या 59 लाख के पार पहुंच चुकी है। ऐसे वाहन अब किसी भी सूरत में दिल्ली में नहीं चल पाएंगे। इससे पहले 2021 में वाहनों का पंजीकरण रद्द किया गया था, उस समय इनकी कुल संख्या 54 लाख थी। अब दिल्ली की सड़कों पर 82 लाख वाहन ही चलने लायक हैं।

सरकार ने उम्र पूरी कर चुके वाहनों को लेकर तीन विकल्प दिए हुए हैं। ऐसे वाहन मालिक परिवहन विभाग से अनापत्ति प्रमाण पत्र (एनओसी) लेकर अपने वाहन को अन्य राज्यों में पंजीकृत करा लें, इन वाहनों को इलेक्ट्रिक में बदलवा लें या फिर इन्हें स्क्रैप (समाप्त) करा लें। सरकार का स्पष्ट निर्देश है कि उम्र की सीमा पूरी होने से पहले ही लोग अपने वाहन को दूसरे राज्य में पंजीकृत करा लें, क्योंकि उम्र पूरी होने के बाद ऐसे किसी भी वाहन के सड़कों पर चलने की इजाजत नहीं हैं।

उम्र पूरी हो चुके वाहन होंगे जब्त

सड़क पर वाहन चलते हुए मिलने पर जब्त कर लिया जाएगा। परिवहन विभाग ने साफ किया है कि राष्ट्रीय हरित प्राधिकरण (एनजीटी) का आदेश है कि वाहन को दूसरे राज्य के जिस शहर के लिए एनओसी मांगी जाएगी, उस शहर के मोटर लाइसेंसिंग अधिकारी (एमएलओ) से सहमति पत्र वाहन मालिक को लेना होगा। उसके बाद ही दिल्ली परिवहन विभाग उस वाहन के लिए एनओसी देगा।

अधिकतर वाहन अन्य राज्यों में पंजीकृत

परिवहन विभाग के एक वरिष्ठ अधिकारी ने कहा है कि जिन वाहनों का पंजीकरण रद्द किया गया है, इनमें से अधिकतर को लोगों ने दूसरे राज्यों में पंजीकृत करा लिया है या फिर उन्हें समाप्त करा दिया है। अब बहुत कम वाहन ही दिल्ली में बचे होंगे। अधिकारी ने कहा कि ऐसे वाहन सड़कों पर चलते हुए पाए जाते हैं तो उन्हें जब्त किया जाएगा।

विभाग ने दिसंबर 2014 को आदेश जारी किया

बता दें कि परिवहन विभाग ने इस बारे में दिसंबर 2014 को आदेश जारी किया था। जिसमें कहा गया था कि एनजीटी ने जुलाई 2016 में दिल्ली-एनसीआर (राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र) में 10 साल से अधिक पुराने डीजल वाहनों और 15 साल से अधिक पुराने पेट्रोल वाहनों के पंजीकरण और चलने पर प्रतिबंध से संबंधित निर्देश जारी किए थे।

इसके अलावा सुप्रीम कोर्ट ने भी 29 अक्तूबर 2018 को दिल्ली में परिवहन विभाग ने कहा कि अब दिल्ली में 10 साल से पुराना कोई डीजल वाहन व 15 साल से पुराना कोई पेट्रोल वाहन नहीं चल सकेगा। प्रत्येक दिन जो भी वाहन अपना समय पूरे करते जाएंगे, उनका पंजीकरण निरस्त होता जाएगा।

किस कैटेगरी में कितने वाहनों का पंजीकरण रद्द

39 लाख दो पहिया वाहन
18 लाख चार पहिया वाहन
60 हजार हल्के माल ढोने वाले व यात्री वाहन
1.41 लाख अन्य वाहन

'यह कड़वी सच्चाई है कि कुछ भी नहीं किया जा रहा', दिल्ली में बढ़ रहे वायु प्रदूषण पर सुप्रीम कोर्ट की टिप्पणी

दिल्ली में बढ़ रहे वायु प्रदूषण को लेकर सुप्रीम कोर्ट में सुनवाई हुई। पंजाब और हरियाणा में पराली जलाने की घटना को रोकने में नाकामी को लेकर सुप्रीम कोर्ट ने सीएक्यूएम को फटकार लगाई। सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि दिल्ली में वायु प्रदूषण से निपटने के लिए वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग (सीएक्यूएम) के आदेशों का उल्लंघन करने वालों पर कोई भी मुकदमा नहीं चलाना चाहता।

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने आज कहा कि कड़वी सच्चाई यह है कि दिल्ली में हर साल बढ़ रही वायु प्रदूषण की समस्या से निपटने के लिए कुछ भी नहीं किया जा रहा है। सर्वोच्च न्यायालय ने कहा कि राष्ट्रीय राजधानी में वायु प्रदूषण से निपटने के लिए गठित वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग (सीएक्यूएम) के आदेशों का उल्लंघन करने वालों पर कोई भी मुकदमा नहीं चलाना चाहता। न्यायमूर्ति एएस ओका ने कहा, ₹हर कोई जानता है कि चर्चा के अलावा कुछ नहीं हो रहा है। यह कड़वी सच्चाई है। पीठ में न्यायमूर्ति ए अमानुल्लाह और न्यायमूर्ति एजी मसीह भी शामिल थे। पिछले हफ्ते, अदालत ने सीएक्यूएम को एक हलफनामा दायर करने के लिए कहा था, जिसमें दिल्ली की खराब हवा के प्रमुख कारणों में से पराली जलाने से निपटने के लिए उठाए गए कदमों का विवरण मांगा गया था।

पूरे सितंबर में आपने कोई बैठक नहीं की: न्यायमूर्ति ओका

अतिरिक्त सॉलिसिटर जनरल ऐश्वर्या भाटी ने अदालत को पैनल की संरचना के बारे में बताया। इस पर न्यायमूर्ति ओका ने कहा कि समिति की पिछले नौ महीनों में केवल तीन बार बैठक हुई और पराली जलाने पर कोई चर्चा नहीं हुई। जस्टिस ओका ने कहा, ₹आखिरी बैठक 29 अगस्त को थी। पूरे सितंबर में कोई बैठक नहीं हुई। आपने कहा कि इस समिति में आईपीएस अधिकारी आदि शामिल हैं जो निर्देशों को लागू करेंगे। अब जब नियम को लागू करने की बात आती है तो 29 अगस्त के बाद एक भी बैठक नहीं हुई है।"

क्या यही गंभीरता दिखाई जा रही ?: न्यायमूर्ति अमानुल्लाह

न्यायमूर्ति अमानुल्लाह ने पूछा कि 11 सदस्यों ने सुरक्षा और प्रवर्तन पर एक उप-समिति की बैठक क्यों आयोजित की? क्या यही गंभीरता है जो दिखाई जा रही है?" न्यायमूर्ति ओका ने कहा कि केवल कुछ बैठकें हो रही हैं। अदालत ने कहा, ₹आपके आदेशों का जमीनी स्तर पर कार्यान्वयन कहां है? जब तक नियमों को लागू नहीं किया जाएगा, कोई भी इसके बारे में चिंता नहीं करेगा।"

मुकदमा चलाने के लिए सबसे नरम प्रावधान: सुप्रीम कोर्ट

जब सरकारी वकील ने जवाब दिया कि उन्होंने एक लोक सेवक के आदेशों की अवज्ञा से संबंधित धारा के तहत एफआईआर दर्ज की है, तो अदालत ने जवाब दिया, ₹आपने मुकदमा चलाने के लिए सबसे नरम प्रावधान लिया है। सीएक्यूएम अधिनियम की धारा 14 और धारा 15 है, जिसमें पर्यावरण संरक्षण अधिनियम जिसमें कठोर शक्तियां हैं।" सरकारी वकील ने कहा कि उन्होंने कठोर कदम नहीं उठाए क्योंकि वायु प्रदूषण का स्तर धीरे-धीरे कम हो गया है।

दिल्ली के सबसे फेमस ढाबे, इनके आगे मुरथल ढाबा कुछ भी नहीं, जानें कहां पर स्थित है?

वैसे तो मुरथल के ढाबे अपने व्यंजनों के लिए सबसे ज्यादा फेमस हैं। दिल्ली के लोग भी इन ढाबा का स्वाद चखने के लिए मुरथल जाते हैं। विशेषकर वीकेंड पर इन ढाबों पर दिल्ली के लोगों की खासी भीड़ रहती है। आइए जानते हैं दिल्ली के सबसे फेमस ढाबे।

दिलवालों की दिल्ली में सबसे ज्यादा लोग खाने-पीने के शौकीन होते हैं। स्वाद चखने के लिए दिल्ली के लोग किसी भी जगह पर पहुंच जाते हैं।वहीं, सोनीपत के मुरथल स्थित ढाबे भी दिल्ली के लोगों को खासे पसंद हैं। तो चलिए बिना देर किए आपको बताते हैं दिल्ली के बेहतरीन ढाबों के बारे में...

सफदरजंग एन्क्लेव स्थित राजिंद्रा ढाबा

दिल्ली के सफदरजंग एन्क्लेव में स्थित डीडीए मार्केट में फेमस राजिंद्र दा ढाबा है, यहां पर लोग नॉन वेज के व्यंजनों का स्वाद चखने के लिए दूर-दूर से आते हैं। इस ढाबे की मखमली मछली, गौलौती कबाब, चिकन बुराह और सती किचन इनकी विशेषताएं हैं। बटन नान इतनी मखमली होती है कि मुंह में रखते ही घुल जाती है। यदि आप सफदरजंग एन्क्लेव जा रहे हो, तो एक बार यहां खाना जरुर ट्राई करें

कुंदन ढाबा, करोल बाग

करोल बाग में देव नगर के पदम सिंह रोड़ पर कुंदन ढाबा मौजूद है। इस ढाबे पर ग्राहकों की भीड़ जुटी रहती है। विशेषकर छुट्टी के दिन तो यहां लंबी लाइन लगी रहती है। छुट्टी वाले दिन तो काफी भीड़ होती है। यहां पर शाकाहारी और मांसाहारी दोनो ही प्रकार को भोजन परोसे जाते हैं। नॉन वैज में तंदूरी चिकन, बटर चिकन और कबाब बहुत फेमस है, वहीं वैज की बात करें तो दाल मखनी और राजमा चावला सबसे ज्यादा डिमांड में रहते हैं। इसके साथ ही यहां अन्य व्यंजन काफी टेस्टी हैं जिसने पहली बार खाया है, वह बार-बार आने से खुद को रोक नहीं पाएंगे।

करोल बाग का प्रेम ढाबा

दिल्ली के करोल बाग में स्थित प्रेम ढाबा बेहद फेमस है। यह ढाबा न्यू रोहतक रोड पर ब्लॉक डी में है, यहां पर नॉन वेज और वेज व्यंजन परोसे जाते हैं। ग्राहकों को यहां की दाल मखनी भी बेहद प्रसिद्ध है। इसके साथ ही, शाही पनीर, कढ़ाई पनीर और पनीर बटर मसाला का भी स्वाद चख सकते हैं। अगर आप मांसाहारी के शौकीन हैं, तो यहां की चिकन करी, मटर करी आर्डर कर सकते हैं, जिसका स्वाद आप कभी नहीं भूल पाएंगे।

दिल्ली 6 की काके दी हट्टी

चांदनी चौक, दिल्ली 6 मे काके दी हट्टी है सबसे ज्यादा फेमस है, यह देश कि सबसे बड़ी नॉन वेज परोसने वाला ढाबा है। बता दें कि काके दी हट्टी ढाबा करीब 4 जेनरेशन से लोगों को अपने व्यंजनों के टेस्ट को परोस चुका हैं। यहां की सबसे फेमस धुआंधार नान, आलू प्याज नान, पनीर नान के साथ ही अमृतसरी थाली भी सबसे बढ़िया है। अगर आपने यहां के जायके का स्वाद नहीं लिया है तो एक बार जरुर जाए

छतरपुर का अजीत खालसा ढाबा

छतरपुर में स्थित अजीत ढाबा काफी फेमस है। दरअसल, यह ढाबा टिवोली गार्डन के ठीक सामने छतरपुर रोड पर है। बता दे कि, यह ढाबा करीब 40 सालों से चल रहा है, उतना ही इसका असाधारण व्यंजन है। ज्यादातर फूड ब्लॉगर मानते है कि दिल्ली के टॉप ढाबों की बात की जाए तो छतरपुर का अजीत खालसा ढाबा सबसे ऊंचे स्थान पर है।

शेविंग क्रीम को इन तरीकों से भी किया जा सकता है इस्तेमाल, जानें

शेविंग क्रीम की मदद से कालीन से लेकर कपड़े के दाग आसानी से हटाए जा सकते हैं। कालीन पर लगे दाग हटाने के लिए उस पर शेविंग क्रीम लगाएं। इसे कुछ मिनट तक लगा रहने दें और फिर गीले कपड़े से पोंछ लें।

अगर मैं आपसे पूछूं कि शेविंग क्रीम का इस्तेमाल किसलिए किया जाता है, तो यकीनन आप यही कहेंगे कि इससे शेविंग की जाती है। यह सच है कि शेविंग क्रीम की मदद से आप अनचाहे बालों से आसानी से छुटकारा पा सकते हैं। लेकिन इसके फायदे सिर्फ यहीं तक सीमित नहीं है। अगर आप चाहें तो शेविंग क्रीम का इस्तेमाल कई अलग-अलग तरीकों से भी कर सकते हैं।

यह आपके घर की क्लीनिंग से लेकर ज्वैलरी की केयर करने तक काफी चीजों में मददगार हो सकता है। आप शेविंग क्रीम की मदद से घर के कई छोटे-छोटे काम आसान बना सकते हैं। तो चलिए आज इस लेख में हम आपको शेविंग क्रीम को इस्तेमाल करने के आसान तरीकों के बारे में बता रहे हैं-

हटाए दाग

शेविंग क्रीम की मदद से कालीन से लेकर कपड़े के दाग आसानी से हटाए जा सकते हैं। कालीन पर लगे दाग हटाने के लिए उस पर शेविंग क्रीम लगाएं। इसे कुछ मिनट तक लगा रहने दें और फिर गीले कपड़े से पोंछ लें। इसी तरह कपड़ों पर लगे कॉफी, चाय या खाने आदि के दाग हटाने के लिए उस पर शेविंग क्रीम लगाएं। फिर उसे लगा रहने दें और फिर हमेशा की तरह धो लें।

बाथरूम की करें सफाई

बाथरूम की अलग-अलग सतहों जैसे सिंक, नल और शॉवर आदि का क्लीन करने के लिए शेविंग क्रीम का इस्तेमाल किया जा सकता है। इन जगहों पर अक्सर साबुन के मैल लगे रह जाते हैं। लेकिन शेविंग क्रीम इन दागों को हटाने में मदद करता है और चमक देता है। बाथरूम में लगे मिरर को क्लीन करने के लिए भी शेविंग क्रीम का इस्तेमाल किया जा सकता है।

चांदी की ज्वैलरी करें साफ

चांदी की ज्वैलरी को समय-समय पर साफ करने की जरूरत पड़ती है, क्योंकि वह समय क साथ काली पड़ने लगती है। ऐसे में उसे फिर से साफ करने के लिए आप शेविंग क्रीम का इस्तेमाल करें। इसके लिए ज्वैलरी पर शेविंग क्रीम लगाएं और फिर उसे कुछ देर के लिए छोड़ दें। फिर उसे पानी से धो लें। जब ज्वैलरी सूख जाए, तो आप उसे एक बार पेपर टॉवल पर लपेटकर रखें। आप देखेंगे कि चांदी की ज्वैलरी फिर से नई जैसी लग रही है।

क्या आपकी भी स्किन वैक्सिंग कराने के बाद होती है डैमेज? तो इन बातों का रखें ख्याल

अगर आप घर में वैक्सिंग करते हैं तो आपको कुछ बातों का खास ध्यान रखना चाहिए ताकि स्किन डैमेज न हो और इस लेख में हम आपको टिप्स बताने जा रहें, इन्हें फॉलो जरुर करें। कई महिलाएं घर पर ही वैक्सिंग करती हैं लेकिन घर पर वैक्सिंग करने के दौरान कुछ बातों का खास ध्यान रखना चाहिए ताकि स्किन डैमेज न हो।

अनचाहे बाल पैरों और हाथों की खूबसूरती को कम कर देते हैं। वहीं इनकी सुंदरता में बनाए रखने के लिए महिलाएं वैक्सिंग का सहारा लेती हैं। महिलाएं ब्यूटी पार्लर में जाकर वैक्सिंग करवाती हैं लेकिन ये काफी खर्चीला होता है। वहीं इस दौरान कई महिलाएं घर पर ही वैक्सिंग करती हैं लेकिन घर पर वैक्सिंग करने के दौरान कुछ बातों का खास ध्यान रखना चाहिए ताकि स्किन डैमेज न हो। वहीं इस आर्टिकल में हम आपको इसी बातों का खास ध्यान रखना चाहिए। चलिए आपको बताते हैं किन बातों का रखना है ध्यान।

क्वालिटी का रखें ध्यान

वैक्सिंग करते समय इस बात का ध्या रखें कि वैक्स की क्वालिटी अच्छी ही ताकि इसका इस्तेमाल करने से स्किन से जुड़ी कोई समस्या पैदा न हो। वहीं वैक्स की क्वालिटी का हमेशा ध्यान रखें, क्योंकि इससे स्किन डैमेज नहीं होगी।

पाउडर का करें इस्तेमाल

कई महिलाओं की स्किन सेंसिटिव होती हैं। वहीं गर्म वैक्सिंग को हाथ -पैरों पर लगाने से पहले आप पाउडर का इस्तेमाल करें, क्योंकि वैक्सिंग की वजह से स्किन डैमेज हो जाती है। पाउडर के यूज से त्वचा पर नमी

नहीं रहती और वैक्सिंग के बाद किसी भी तरह परेशानी नहीं आती है।

अच्छी स्ट्रिप्स का यूज करना

अगर आप घर में वैक्सिंग करती हैं तो डिस्पोजेबल स्ट्रिप्स का इस्तेमाल कर सकते हैं। कई बार महिलाएं एक ही स्ट्रिप्स का इस्तेमाल न करें। वहीं स्ट्रिप की जगह अगर आप जीन्स का कपड़ा का इस्तेमाल करती हैं। लेकिन ऐसा करने से स्किन से जुड़ी समस्या शुरु हो सकती है।

वैक्सिंग के बाद नहाएं जरुर

वैक्सिंग करवाने से पहले नहाना जरुरी नहीं हैं लेकिन वैक्सिंग के बाद नहाना भी जरुरी हैं ताकि स्किन पर लगी वैक्स आराम से निकल जाए और कोई इंफेक्शन न हो। वैक्सिंग से पहले पैच टेस्ट करना जरुरी है

वैक्सिंग करने से पहले जहां बाल निकल जाते हैं तो वहीं कई वैक्सिंग के बाद और स्किन डैमेज हो सकती हैं। वहीं ऐसे में वैक्सिंग करवाने से पहले टेस्ट करवा लें।

घर पर बनाएं बच्चों के लिए स्पेशल यूनिकॉर्न मसाला डोसा, नोट करें रेसिपी

साउथ इंडियन डोसा पूरे भारत में काफी फेमस है। डोसा बेहद आसानी से और क्विक बनने वाली हेल्दी रेसिपी है। बच्चों को भी डोसा खाना खूब पसंद होता है। घर पर नए तरीके से यूनिकॉर्न मसाला डोसा खाएं।

दक्षिण भारत का सबसे फेमस डोसा बहुत सारे लोगों को खाना खूब पसंद है। पूरे भारत में डोसा का स्वाद रच-बस गया है। हर घरों में इसे बनाया जाने लगा हैं। इस लेख में हम आपको अलग अंदाज में बच्चों के लिए यूनिकॉर्न मसाला डोसा की आसान रेसिपी शेयर करने जा रहे हैं, जिसे आप झटपट से बना लेंगे। बच्चे इस डोसा को चखेंगे, तो वह आपसे बार-बार इसे खाने के लिए मांगे। आइए जानते यूनिकॉर्न मसाला डोसा की आसान रेसिपी।

यूनिकॉर्न मसाला डोसा बनाने के लिए इन चीजों की जरुरत होगी

यूनिकॉर्न मसाला डोसा बनाने के लिए डोसा बैटर बनाने के लिए, नैचुरल कलर (पालक, चुकंदर और हल्दी) आलू मसाला और घी की जरुरत पड़ेगी।

यूनिकॉर्न मसाला डोसा बनाने का तरीका

- सबसे पहले 100 ग्राम डोसा बैटर को डोसा तवे पर डालें।
- इसके बाद बड़ा डोसा बनाएं फिर आप इसमें एक-एक कर अपने सभी नैचुरल कलर्स फैलाते जाएं।
- फिर आप चुकंदर, पालक और हल्दी को फैलाएं। यह सभी कलर्स लिक्विड फॉर्म में रखें ताकि फैलाने में आसानी हो।
- जब कलर्स डोसे में मिक्स हो जाए इसके बाद इसमें घी लगाएं। फिर कुछ सेकेंड रुकने के बाद डोसा को फोल्ड कर लें।
- अब अपने क्रिस्पी यूनिकॉर्म डोसा को नारियल चटनी, टमाटर चटनी और आलू मसाला के साथ सर्व करें।

बंबल ने रिपोर्टिंग फीचर का किया विस्तार, AI-जेनरेटेड और नकली प्रोफाइल्स को कर सकते हैं कवर

बंबल, जो भारत में एक लोकप्रिय डेटिंग ऐप है, ने इस फीचर को लॉन्च करने का फैसला अपनी भारतीय उपस्थिति के तहत किया है। यह फीचर इस्तेमालकर्ताओं को अधिक सुरक्षित महसूस कराने का मकसद रखता है, क्योंकि यह उन्हें नकली प्रोफाइल्स की पहचान और रिपोर्ट करने में मदद करेगा।

बंबल ने अपनी रिपोर्टिंग फीचर को विस्तारित कर दिया है। जिससे यह यूजर्स के लिए अब एक और तरीका बन जाता है नकली और AI-जेनरेटेड प्रोफाइल्स को संदेश करने के लिए। यह नया फीचर भारतीय बाजार में भी उपलब्ध होगा, जहां तकनीकी उन्नति की वजह से ऐसे प्रोफाइल्स की संख्या बढ़ रही है।

बंबल, जो भारत में एक लोकप्रिय डेटिंग ऐप है, ने इस फीचर को लॉन्च करने का फैसला अपनी भारतीय उपस्थिति के तहत किया है। यह फीचर इस्तेमालकर्ताओं को अधिक सुरक्षित महसूस कराने का मकसद रखता है, क्योंकि यह उन्हें नकली प्रोफाइल्स की पहचान और रिपोर्ट करने में मदद करेगा।

इस नए फीचर के अंतर्गत, उपयोगकर्ता अब AI-जेनरेटेड प्रोफाइल्स को भी रिपोर्ट कर सकेंगे, जो कई बार असली प्रोफाइलों की तरह दिख सकते हैं और इस तरह की पहचान कठिन हो सकती है। बंबल के प्रतिनिधि ने बताया कि उनका उद्देश्य यह है कि उपयोगकर्ता एक न्यायिक और सुरक्षित माहौल में ऑनलाइन डेटिंग का आनंद ले सकें, और नकली प्रोफाइल्स के खिलाफ सख्ती से लड़ाई लड़ सकें।

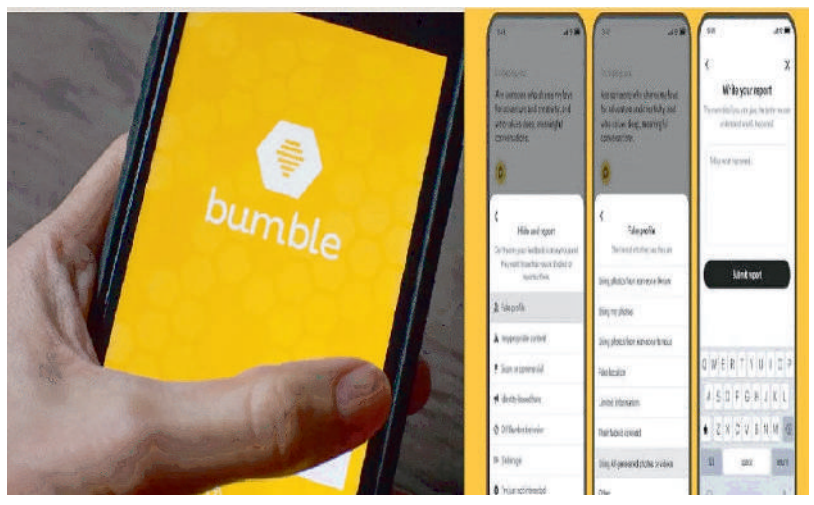

बंबल ने इस फीचर को अपने अंदर की तकनीकी विशेषताओं के साथ तैयार किया है ताकि वे स्वचालित रूप से ऐसे प्रोफाइल्स को पहचान सकें और इस पर नियंत्रण प्राप्त कर सकें। इसके अलावा, उपयोगकर्ताओं को भी सीधे इस फीचर का उपयोग करने का अधिकार होगा ताकि वे अन्य उपयोगकर्ताओं की सुरक्षा में योगदान कर सकें।

दूसरों को खुश करने के चक्कर में कहीं खुद की मेंटल हेल्थ खराब कर लीं, हैप्पी रहने के लिए अपनाइए ये 4 तरीके

भागदौड़ भरी लाइफस्टाइल और गलत खान की वजह से कई बार तनाव महसूस करते रहते हैं। बिजी जीवनशैली में इंसान खुद के लिए टाइम नहीं निकाल पाता जिस वजह से वह खुश नहीं रहता है और मेंटल हेल्थ भी खराब होने लगती है। गौरतलब है कि मेटल हेल्थ पर ध्यान देना काफी जरुरी जितना हम फिजिकल हेल्थ का ध्यान रखते हैं। कई बार होता है हम दूसरे को खुश करने में लगे रहते हैं लेकिन खुद की खुशी का भूल ही जाते हैं। याद रखें कि लोग आपसे काफी खुश नहीं होंगे। इसलिए अपनी मेंटल हेल्थ न खराब करें। मेंटल हेल्थ खराब होने से इंसान में गुस्सा और चिड़चिड़ापन बढ़ जाता है, धीरे-धीरे यह तनाव उत्पन्न होने लगता है। आज हम आपको तनाव से निकलने के लिए इन तरीकों को बता रहे हैं।

न कहने में शर्म नहीं करें

कई बार होता है कि दूसरो की खुश करने के चक्कर में हम न कहने में काफी संकोच करते हैं। दूसरों को बुरा न लगे इसके चलते हर काम करने के लिए हां कर देते हैं, लेकिन आपको न कहना सीखना होगा तभी आप इस आदत से बाहर निकल जाएंगे। शुरुआत में आपके लिए ये मुश्किल होगा और आपको अपनी मेंटल हेल्थ के बारे में सोचना जरुरी है।

अपनी प्राथमिकताओं को समझें

हमेशा इस बात का ध्यान रखे कि सदैव अपनी प्राथमिकताओं को अच्छे से समझें। दूसरों से पहले खुद के बारे में सोचें। इसी एक इग्नोरेंस के चलते आप कब प्लीजर बन जाते हैं, यह आपको खुद पता नहीं चलेगा। अपनी जरुरतों, ऑब्जेक्टिव्स और वेलबिंग को प्रियोरिटी पर रखें। हालांकि, इसका यह मतलब भी नहीं कि आप स्वार्थी हैं, खुद को मेंटली और फिजिकली स्ट्रॉन्ग रखकर आप दूसरों की ज्यादा बेहतर तरीके से मदद कर सकते हैं।

सोने से पहले डायबिटीज पेशेंट पानी में मिलाकर पी लें ये 5 मसालें, फिर देखें इसका कमाल, जड़ से खत्म हो जाएगा ब्लड शुगर

आज के समय में सबसे ज्यादा लोग डायबिटीज की बीमारी से परेशान है। सचमुच यह एक क्रोनिक डिजीज है, यह तब होता है जब पैंक्रियाज पर्याप्त इंसुलिन का उत्पादन नहीं कर करता है या फिर शरीर अपने द्वारा उत्पन्न इंसुलिन का प्रभावी ढंग से उपयोग नहीं कर पाता है। दरअसल, इंसुलिए एक प्रकार का हार्मोन है, जो ब्लड शुगर को कंट्रोल करता है। अगर बॉडी में ब्लड शुगर कंट्रोल न होने पर कई तरह की स्वास्थ्य समस्याएं होती है। यदि आप भी डायबिटीज पीड़ित हैं, तो रात के रुटीन पर ज्यादा ध्यान दें। रात के समय सोने से पहले पानी में कुछ मसालों को मिक्स करके पीने से डायबिटीज में काफी लाभ मिलेगा।

अजवाइन का पानी

अजवाइन में कई सारे पोषक तत्व पाए जाते हैं। जिनसे ब्लड शुगर लेवल कम हो सकता है। इसमें फाइबर, एंटीऑक्सीडेंट और एंटी-इंफ्लेमेटरी गुण पाए जाते हैं। यह मेटाबॉलिज्म में मदद करता है। रात के समय सोने से पहले 1 चम्मच अजवाइन को पानी में उबालकर पिएं। शुंगर आपका कंट्रोल में रहेगा।

लौंग का पानी

इसमें मौजूद यूजेनॉल ब्लड शुगर लेवल को कंट्रोल करने में काफी मदद करता है। लेकिन, ज्यादा मात्रा में लौंग हाइपोग्लाइसीमिया (कम रक्त शर्करा) का कारण बन सकता है जो सेहत के लिए हानिकारक हो सकता है। आपको हमेशा सीमित मात्रा में ही लौंग पानी पिएं। रात में सोने से पहले 1 गिलास पानी में 2 से 3 लौंग को डालकर अच्छी तरह से उबाल लें। इसके बाद इस पानी का सेवन करें। इससे काफी हद तक शुगर कंट्रोल हो सकता है।

जीरा का पानी पिएं

ब्लड शुगर लेवल को कंट्रोल करने के लिए जीरा वाटर सबसे फायदेमंद है। इसमें एंटीऑक्सीडेंट्स, एंटी-डायबिटिक गुण होते हैं, जो शुगर लेवल को कम कर सकता है। यह शरीर में इंसुलिन उत्पादन में बढ़ावा देता है। रात को सोने से पहले 1 कप जीरे का पानी पी लें। फिर देखें इसका चमत्कार।

मेथी का पानी

रात के समय सोने से पहले मेथी का पानी जरुर पिएं। 1 गिलास पानी में 1 चम्मच करीब मेथी डालकर इसे आधा होने तक उबाल लें। फिर आप इसे चाय की तरह पिएं। इससे आपका शुगर काफी हद तक कंट्रोल हो जाएगा।

दालचीनी का पानी

माना गया है कि दालचीनी की मदद से शुगर लेवल को कंट्रोल करने में काफी हद तक मदद मिल सकती है। दालचीनी हमारे शरीर में इंसुलिन प्रतिरोध को कम करके ब्लड शुगर लेवल को कंट्रोल करता है। यदि आप रात को सोने से पहले 40 दिनों पर दालचीनी के पानी का सेवन करते हैं, तो इससे काफी सुधार हो सकता है।

LG के आदेश के बाद अधिकारियों के छूटे पसीने, बारिश में ही नहीं, साल भर नालों से गाद निकालने का सौंपा काम

परिवहन विशेष न्यूज

दिल्ली में जलभराव की समस्या से निपटने के लिए एलजी वीके सक्सेना ने बड़ा फैसला लिया है। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिया है कि मानसून के दौरान ही नहीं बल्कि पूरे साल नालों और सीवर लाइनों से गाद निकालने का काम किया जाए। इस पहल से सुनेहरी बारापुला कुशक शाहदरा और नजफगढ़ नालों के हालात में सुधार देखने को मिला है।

नई दिल्ली। बरसात के दौरान दिल्ली में जलभराव से पैदा हुए हालात को एलजी वीके सक्सेना ने गंभीरता से लिया है। उन्होंने कुछ समय पहले इन हालात का स्वयं जायजा लेकर बड़े नालों का निरीक्षण किया था और अधिकारियों को तुरंत इनमें से गाद निकालने के निर्देश दिए थे। उनकी इस पहल के अब सकारात्मक परिणाम देखने को मिल रहे हैं। इसके चलते सुनेहरी, बारापुला, कुशक, शाहदरा और नजफगढ़ नालों के हालात में नाटकीय बदलाव देखने के मिले हैं।

एलजी ने स्वयं इन बदलावों की जानकारी एक्स पर साझा की है। उन्होंने कहा कि दिल्ली से मानसून की विदाई हो चुकी है। ऐसे में उन्हें दिल्ली सरकार के विभाग व एजेंसियों की रिपोर्ट व लोगों की ओर से जो प्रतिक्रियाएं मिल रही हैं, उनसे पता चलता है कि मेरे हालिया दौरे के बाद सुनेहरी, बारापुला, कुशक, शाहदरा और नजफगढ़ नालों से गाद निकालने के ठोस प्रयास के चलते जलभराव व बाढ़ के हालात में बड़ा बदलाव देखने को मिला है।

एलजी ने जल्द ही आदेश जारी करने को कहा

इन परिणामों से उत्साहित एलजी ने दिल्ली सरकार के अधिकारियों को आदेश दिया है कि वे केवल मानसून के दौरान ही नहीं बल्कि पूरे साल नालों व सीवर लाइनों से गाद निकालने का काम करते रहें। इससे दिल्ली में दोबारा जलभराव व बाढ़ के हालात नहीं बन सकेंगे। एलजी ने कहा कि संबंधित एजेंसियों, सिंचाई एवं बाढ़ नियंत्रण विभाग, दिल्ली जल बोर्ड, पीडब्ल्यूडी और एमसीडी जल्द से जल्द इस संबंध में आदेश जारी करें।

"अवैध कब्जे के खिलाफ असहयोग आंदोलन: वैध व्यापार का समर्थन करें, कानून का सम्मान करें"

अवैध कब्जा अगर गैरकानूनी है, तो ऐसी अवैध दुकानों से खरीदारी करना भी बंद किया जाना चाहिए, ताकि उन्हें सबक सिखाया जा सके। हम अक्सर अवैध कब्जे की शिकायत करते हैं, लेकिन दूसरी तरफ ऐसी ही अवैध दुकानों से सेवाएं लेते हैं या खरीदारी करते हैं। अगर हम इस प्रवृत्ति को बदलना चाहते हैं, तो हमें एक असहयोग आंदोलन शुरू करना होगा। हमें सिर्फ उन्हीं दुकानों का समर्थन करना चाहिए, जो कानूनी रूप से अपना व्यापार सही तरीके से चला रही हैं।

अवैध कब्जा न केवल प्रशासनिक विभाग का समय और ऊर्जा बर्बाद करता है, बल्कि यह कानून और व्यवस्था के लिए भी एक गंभीर मुद्दा है। शहरों की सड़कों पर बढ़ते अवैध कब्जे की वजह से यातायात जाम, दुर्घटनाएं और अराजकता जैसी समस्याएं दिन-प्रतिदिन बढ़ रही हैं। यह समस्या तभी खत्म हो सकती है, जब नागरिक खुद जागरूक होकर ऐसे दुकानों और व्यवसायों का बहिष्कार करें, जो अवैध तरीके से जमीन पर कब्जा कर अपना व्यापार चला रहे हैं।

इसलिए, हम सभी से हाथ जोड़कर विनम्र अपील करते हैं कि जो दुकानें वैध हैं, उनका समर्थन करें, ताकि समाज में अनुशासन और कानून का पालन बना रहे। अवैध कब्जा न केवल कानूनी तौर पर गलत है, बल्कि यह नैतिक रूप से भी अनुचित है। अगर हम सब मिलकर इस असहयोग आंदोलन को आगे बढ़ाएं, तो हम इस मुद्दे को जड़ से खत्म कर सकते हैं।

थोड़े से पैसे बचाने के चक्कर में हमने अपनी सड़कों, मोहल्लों, गलियों में गैरकानूनी दुकानों की एक सेना गठित कर दी है, जो अब लोगों का सिरदर्द बन चुकी है।"

आज हर कोने में अवैध दुकानों का बोलबाला है, और इसके साथ-साथ अवैध पार्किंग की समस्या भी सिर उठा रही है। ना जाने यह सिलसिला कहां तक बढ़ेगा, इसका अंदाजा किसी को नहीं है। हाल ही में फरीदाबाद के कई इलाकों में इस समस्या को देखा गया है और यह अब एक व्यापक पैमाने पर फैलती जा रही है।

प्रशासन समय-समय पर इसके खिलाफ कार्रवाई करता है, लेकिन अब समय आ गया है कि एक नागरिक के रूप में हम भी अपनी जिम्मेदारी निभाएं। हमें ऐसी अवैध दुकानों से दूरी बनानी होगी, जो कानून को ताक पर रखकर व्यापार कर रही हैं। यह सिर्फ प्रशासन की जिम्मेदारी नहीं है, बल्कि हर नागरिक का कर्तव्य है कि वह ऐसे व्यापार को न बढ़ावा दे और शहर की व्यवस्था बनाए रखने में अपना योगदान दे।

आइए, आज से ही हम संकल्प लें कि अवैध कब्जे वाली दुकानों से कोई सामान नहीं खरीदेंगे और प्रशासन के साथ मिलकर समाज को अवैध कब्जे से मुक्त करेंगे। कानून का पालन करें, कानून का सम्मान करें।

आरएमएल अस्पताल में 9 घंटे चली सर्जरी, डॉक्टरों ने जोड़ी युवक की कलाई; मशीन में कट गया था हाथ

परिवहन विशेष न्यूज

दिल्ली के आरएमएल अस्पताल के डॉक्टरों ने हरियाणा के बहादुरगढ़ के एक युवक की कटी हुई कलाई को दोबारा जोड़ने में सफलता हासिल की है। करीब 25 डॉक्टरों नर्सिंग और पैरामेडिकल कर्मचारियों की टीम ने मिलकर करीब नौ घंटे में यह सर्जरी की। युवक का हाथ धीरे-धीरे पूरी तरह ठीक से काम करने लगेगा। आगे विस्तार से पढ़िए पूरी खबर।

नई दिल्ली। दिल्ली में आरएमएल अस्पताल के डाक्टरों ने हरियाणा के बहादुरगढ़ के रहने वाले एक 24 वर्षीय युवक की कटी हुई कलाई को दोबारा जोड़ने में कामयाबी हासिल की। पांच दिन पहले करीब 25 डाक्टरों, नर्सिंग व पैरामेडिकल कर्मचारियों की टीम ने मिलकर करीब नौ घंटे में यह सर्जरी की थी।

इसके बाद मरीज के हाथ में रक्त आपूर्ति सामान्य हो रही है और उसके स्वास्थ्य में भी सुधार है। डाक्टरों को उम्मीद है कि युवक का हाथ धीरे-धीरे पूरी तरह ठीक से काम करने लगेगा।

अस्पताल के बर्न एवं प्लास्टिक सर्जरी विभाग के प्रोफेसर डा. मुकेश शर्मा ने बताया कि युवक 28 सितंबर की रात फैक्ट्री में काम करने के दौरान रात एक बजे लकड़ी काटने की लेजर मशीन से उसके दायें हाथ की कलाई के नीचे का हिस्सा कट कर अलग हो गया। युवक इलाज के लिए एक स्थानीय अस्पताल में पहुंचा। वहां से स्थानांतरित कर सुबह करीब साढ़े छह बजे उसे आरएमएल अस्पताल की इमरजेंसी में लाया गया। वहां से मरीज को प्लास्टिक सर्जरी विभाग में भेजा गया।

इसके बाद प्लास्टिक सर्जरी के डाक्टरों की दो टीम बनाई गई। एक टीम ने हाथ के कट कर अलग हुए हिस्से को ठीक से साफ किया और डाक्टरों की दूसरी टीम ने मरीज के हाथ की साफ सफाई की। इसके बाद डा. मुकेश

शर्मा के नेतृत्व में प्लास्टिक सर्जरी के पांच रेजिडेंट डाक्टर, दो आर्थोपेडिक सर्जन व एनेस्थीसिया के डाक्टरों की टीम ने मिलकर सर्जरी शुरू की।

पहले आर्थोपेडिक सर्जन ने के-वायर से हाथ व कलाई की हड्डियों को जोड़ा। इसके बाद प्लास्टिक सर्जरी के डाक्टरों ने माइक्रोस्कोप की मदद से टेंडन (स्नायु), धमनियों व अन्य नसों व नर्वस को जोड़ा। मरीज को कुल चार यूनिट ब्लड चढ़ाना पड़ा। तीन दिन तक आइसीयू में रहने के बाद मरीज को वार्ड में स्थानांतरित कर दिया गया।

हाथ के कटे हुए हिस्से को ठीक से पैक करना जरूरी

युवक का हाथ कटने के बाद उसे पालिथिन में बर्फ के साथ रखकर लाया गया था। अस्पताल के डाक्टरों का कहना है कि यह शरीर के कटे हुए हिस्से को पैक करने का गलत तरीका है। आरएमएल अस्पताल के बर्न एवं प्लास्टिक सर्जरी के विभागाध्यक्ष डा. समिक भट्टाचार्य ने बताया कि कटे हुए हाथ पहले साफ पानी या स्लाइन से साफ कर किसी गीले कपड़े या काटन में लपेटकर पालिथिन में रखना हिए। इसके बाद उसे दूसरी पालिथिन में बर्फ के साथ या आइस बाक्स में रखकर पैक करना चाहिए। कटे हुए हाथ के साथ मरीज को छह घंटे में अस्पताल पहुंच जाना चाहिए।

प्रयोगधर्मी हैं रंगकर्मी

हे देश के प्रयोगधर्मी,
काश तुम होते रंगकर्मी।
अगर तुम भी होते अभि-नेता,
तब तो तुम्हें कोई भी स्वीकार लेता।
क्या-क्या नहीं तुम कहते रहते हो?
ज़मीं पर नहीं आसमां पर विचरते हो।
न होने वाला असंभव सा ज्ञान,
जिसके पहले ही निकले हुए हो प्राण!
चुनाव में जब चाहे बाटते रहते हो।
हे देश के प्रयोगधर्मी,
काश तुम होते रंगकर्मी।
आलू से सोना बनाने का प्लान भी,
हमें तुमने ही लाकर दिया था!
सारा जग जम के हँस रिया था।
तुम्हारे आसपास रहने वाला भी,
बगले झाँक ज़ोर से हंस दिया था।
हे देश के प्रयोगधर्मी,
काश तुम होते रंगकर्मी।
भई आपने जलेबी क्या खाई?
फिर दिमाग में नया प्लान घूम रहा था।
जलेबी की फैक्ट्री लगाने का सोच लिया था।
पच्चिस-पचास हज़ार लोगों को रोजगार,
देने का भी ख्वाब देख मन बना लिया था।
विदेशों में एक्सपोर्ट की उम्मीद भी लगा लीं थीं।
हे देश के प्रयोगधर्मी,
काश तुम होते रंगकर्मी।

संजय एम. तराणेकर
(कवि, लेखक व समीक्षक)
इंदौर (मध्यप्रदेश)
98260-25986

अंबेडकर नगर के मदनगीर में पुलिस पब्लिक मीटिंग आयोजित

हमें अपने बच्चों को अच्छे संस्कार देने होंगे ताकि वे सब के साथ अच्छा व्यवहार करें : एसएचओ रामपाल

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। कानून व्यवस्था सुचारू रूप से चलती रहे इसलिए दिल्ली पुलिस के आल्हा अधिकारी समय-समय पर आम लोगों से मिलकर समस्याओं पर चर्चा करते हैं। इसी कड़ी में दिल्ली के अंबेडकर नगर स्थित मदनगीर इलाके में वार्ड नंबर 166 में परिवर्तन आरडब्ल्यूए पुष्प विहार द्वारा पुलिस पब्लिक मीटिंग का आयोजन किया गया। इस आयोजन में राष्ट्र की आवाज एनजीओ की भी सहभागिता रहीं। इस मीटिंग में इलाके के सभी लोग शामिल रहे।

इस मौके पर अंबेडकर नगर थाने के थाना अध्यक्ष एसएचओ रामपाल यादव मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुए। उन्होंने मीटिंग को संबोधित करते हुए कहा कि अंबेडकर नगर में पहले के मुकाबले अपराधीक गतिविधियों में कमी आई है। यह कार्य इसलिए संभव हो पाया कि अंबेडकर नगर के लोग पुलिस की कानून व्यवस्था को बनाए रखने में सहयोग कर रहे हैं।

उन्होंने बताया की अंबेडकर नगर इलाके में 6 लाख से अधिक पब्लिक है। इतने लोगों की सुरक्षा करना पुलिस के लिए एक बड़ी चुनौती होती है। यहां के लोगों को ही अपनी सुरक्षा के लिए आगे आना होगा। उन्होंने कहा कि अपराधी हमारे समाज के अपने लोग ही होते हैं। हमारे परिवार के लोग उन्हें अच्छे संस्कार नहीं दे पाते इसलिए वह अपराध के रास्ते को चुन लेते हैं।

एसएचओ रामपाल यादव ने कहा कि हमें अपने बच्चों को अच्छे संस्कार देने होंगे ताकि वे दूसरे लोगों को भी अपने परिवार का सदस्य ही समझे और सब के साथ अच्छा व्यवहार करें। युवा अपराध इसलिए कर रहे हैं कि परिवार के लोग उन पर लगाम नहीं लग पा रहे हैं। पहले दक्षिणपुरी अपराध के लिए ही जानी जाती थे मगर अब यहां के युवा धीरे-धीरे अच्छे रास्ते पर आते जा रहे हैं। उन्होंने आगे कहा कि मैं अनेक इलाकों में नौकरी कर चुका हूं मगर यहां का इलाका बहुत चुनौतीपूर्ण है यहां के लोग अपने विकास के प्रति बहुत संवेदनशील नहीं है। इलाके के लोगों ने स्कूल जाने वाली लड़कियों की सुरक्षा के संदर्भ में चर्चा की लोगों ने बताया कि स्कूलों के बाहर जब लड़कियों की छुट्टी होती है तो भारी संख्या में लड़के खड़े हो जाते हैं और लड़कियों को परेशान करते हैं। बहुत सारे लोगों ने कहा कि क्षेत्र में कई इलाकों में युवा खुले आम शराब पीते हैं और लोगों के साथ बदतमीजी करते हैं।

इसके अलावा एसएचओ रामपाल यादव ने कहा कि पुलिस कई बार जानबूझकर शक्ति नहीं करती है पुलिस की एक एफआईआर किसी भी व्यक्ति के जीवन को खराब करने के लिए काफी होती है। पुलिस कई बार ऐसे अपराधी किस्म की युवाओं को पकड़ती है और उनको समझा कर छोड़ देती है बहुत सारे युवा तो संभल जाते हैं मगर कुछ फिर से दोबारा गलतियां करना शुरू कर देते हैं। एसएचओ रामपाल यादव ने कहा कि हमारे क्षेत्र में अपराधीक गतिविधियां तभी रुकेगी जब हम अपने बच्चों का ध्यान अन्य गतिविधियों पर केंद्रित करने के लिए बोलेंगे। हमें चाहिए कि हम अपने बच्चों को खेल की तरफ लेकर जाएं। उन्होंने आगे कहा कि पुलिस हर व्यक्ति की मदद के लिए हमेशा तैयार हैं।

इस मीटिंग में मुख्य रूप से राजन नावरिया अध्यक्ष 166 परिवर्तन आरडब्ल्यूए पुष्प विहार, कैलाश बैरवा आरडब्ल्यूए महामंत्री, कमल सांवरिया अध्यक्ष राष्ट्र की आवाज एनजीओ, जगदीश सांवरिया पूर्व अध्यक्ष एससी मार्च महरौली जिला बीजेपी गमनराम परेवा,पूर्व सेवा दल अध्यक्ष अंबेडकर नगर के अलावा भारी संख्या में आम लोग मौजूद रहें।

सेन्ट जोहन एम्बुलेंस ब्रिगेड ने कालकाजी मन्दिर नई दिल्ली पर नवरात्र के दौरान मन्दिर में आने वाले दर्शनार्थियों की सेवा एवं दिल्ली पुलिस की सहायता के लिये फ़र्स्ट एड पोस्ट लगाई

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली : सेन्ट जोहन एम्बुलेंस ब्रिगेड ने कालकाजी मन्दिर नई दिल्ली पर नवरात्र के दौरान मन्दिर में आने वाले दर्शनार्थियों की सेवा एवं दिल्ली पुलिस की सहायता के लिये फ़र्स्ट एड पोस्ट लगाई है। इससे मन्दिर में आने वाले दर्शानार्थियों को बहोत फायदा होगा।

कालकाजी जॉन की कोर्प्स ऑफिसर श्रीमती मोनिका जी के निर्देशन में पोस्ट पर सार्जेंट श्री प्रेम चन्द, सार्जेंट श्री यस एवं शाम की पोस्ट इंचार्ज श्री सुमित कुमार ने अपनी जिम्मेदारी पुरी ईमानदारी से निभाने का वादा करते हुये दर्शनार्थियों की सेवा की जिम्मेदारी ली।

बॉलीवुड स्टार, प्रशासनिक अधिकारी व राजनीति के दिग्गजों की मौजूदगी में सम्पन्न हुआ महात्मा गांधी एक्सीलैंस अवॉर्ड

सुषमा रानी

नई दिल्ली। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी की जयंती के उपलक्ष्य में फेस ग्रुप के तत्वावधान में महात्मा गांधी एक्सीलैंस अवार्ड 2024 का आयोजन ली इलिगेंट होटल में किया गया। फेस ग्रुप के चेयरमैन डॉ0 मुश्ताक अंसारी की अध्यक्षता में आयोजित इस सम्मान कार्यक्रम में दिल्ली सरकार के कैबिनेट मंत्री इमरान हुसैन ने मुख्य अतिथि के रूप में शिरकत की। इसके अलावा एडिशनल कमीश्नर ऑफ दिल्ली पुलिस राजेन्द्र सिंह सागर, नेशनल कमीशन फॉर माइनोरिटी एजूकेशन इंस्टीटियूशन भारत सरकार के सदस्य डॉ0 शाहिद अख्तर, कर्नल ताहिर मुस्तफा, फ़िलीपींस एंबेसी के वाईस कंसूल मार्क एंथोनी जी० आर्टिक्यूलो, दिल्ली अल्पसंख्यक आयोग के पूर्व चेयरमैन जाकिर खान, दरगाह हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया के चीफ़ इंचार्ज सैय्यद काशिफ़ अली निज़ामी, पुलिस इंस्पेक्टर इन्द्रपाल सिंह, ऑल इंडिया इमाम फाउंडेशन के चेयरमैन मौलाना डॉ0 आरिफ़ क़ासमी, मलिक म्यूज़िक इवेंट्स के चेयरमैन संजय मलिक, ऑल इंडिया सैफी कौंसिल के राष्ट्रीय अध्यक्ष चांद मौहम्मद सैफी, दिल्ली प्रदेश अध्यक्ष मौ0 उमर सैफी को वी-आई-पी- गेस्ट के तौर पर सम्मानित किया गया तथा बॉलीवुड एक्टर मनोज बख्शी, शिवा कुमार, विश्व प्रसिद्ध शायरा अना देहलवी, मशहूर सिंगर प्रेम भाटिया, हरियाणवी मॉडल एक्ट्रेस शिल्पा वर्मा

सेलीब्रिटी गेस्ट के रूप में मौजूद रहे।

इस मौक़े पर मंत्री इमरान हुसैन के कहा कि महात्मा गाँधी जी ने अहिंसा के पथ पर चलकर देश को संगठित किया और देश को आज़ाद कराने में सफलता हासिल की। आज फिर से हमें गाँधी जी के सिद्धांतों व संदेशों को अपनाने की ज़रूरत है। उन्होंने कहा अहिंसा के मार्ग को अपनाने में ही सबका हित है।

फेस ग्रुप के मैनेजर डॉ0 बिलाल अंसारी के अनुसार इस कार्यक्रम में 12 राज्यों के लोग शामिल हुए जिसमें अब्दुल्ला पठान, जावेद सिद्दीक़ी, अंबर शर्मा, राजेंद्र, रायशा शाहनवाज़, डॉ० आर० के० लक्ष्मणन, डॉ० बूंगा मल्लीकार्जुन, मनाली जयेश वोरा, डॉ० रवि कुमार वी० एन०, डॉ० इमैनुएल जयकुमार, डॉ० एम० देवेनराह, डॉ० एम० लक्ष्मी नारायण, पीहू त्यागी, अशोक ईश्वरभाई जोधी व शंकर लाल त्रिवेदी 15 कर्मठ चुनिंदा लोगों को अवॉर्ड से सम्मानित किया गया तथा 80 से अधिक समाज के जिम्मेदार लोगों को गेस्ट ऑफ ऑनर दिया गया। सोशल मीडिया स्टार्स की अगर बात करें तो अब्दुल्ला पठान, डॉ0 सोनाली खत्री, करण कपूर, सुषमा वर्मा, आर-जे-आनंद, अनिता सिंह, नवनीता सिंह आदि का क्रेज भी दर्शकों के बीच दिखाई दिया। मंच का संचालन बहुत ही मनमोहक अंदाज में दानिश अय्यूबी, उज़मा अंसारी व समिता अग्रवाल द्वारा किया गया। कार्यक्रम के दौरान विश्व प्रसिद्ध वोल्टेज स्टेबलाइज़र कंपनी सर्वोकॉन के चेयरमैन हाजी कमरूद्दीन सिद्दीकी, एफ-एम-एस- इफ्राटेक के डायरेक्टर साजिद अहमद, डोलफिन फुटवियर के चेयरमैन सैय्यद फरहत अली, सोनम बेकर्स के चेयरमैन हाजी रियाजुद्दीन अंसारी, सर्वोस्टेप पॉवर के चेयरमैन मौहम्मद आलम, नेहरू विहार ब्लॉक कांग्रेस अध्यक्ष अलीम अंसारी, मोटिवेशनल स्पीकर प्रेरणा भाटिया, नेशनल गोल्ड मेडलिस्ट हर्षिता राठी, फिक्की के पेट्रन हाफिज सलीम अहमद, सियासी तकदीर ग्रुप के एडीटर मुस्ताक़ीम खान, जर्नलिज्म टूडे ग्रुप के एडीटर जावेद रहमानी, यमुनापार जैन समाज के प्रवक्ता विराग जैन, आबी प्रोडक्शन हाउस के चेयरमैन योगेश मलिक, एम-डी- शालू राठी, इवेंट आर्गेनाईजर बबीता खान, श्वेता चुग, अमित रॉय, प्रधान सेवक, मुजफ्फर नगर सेवक चौधरी परवेज ऑलम, समाज सेवी रचना सचदेवा, अरविंद वत्स, मॉडल एंकर शिल्पी बहादुर, पत्रकार नुरुद्दीन, समाज सेवी अशोक त्रेहन, नसरीन जहां, गोपाल कृष्ण खंडेलवाल, डॉ0 अबुज़र खान, ज़ीशान अहमद, अजय शर्मा, मेहरबान सिंह, किरण कोहली, अंजली कैश, संतोष राणा, नूर मौहम्मद, एम- रामिश आदि को भी सम्मानित किया गया। कार्यक्रम की सफलता में शबाना अज़ीम, ज़ैनब अंसारी, मीनू ठाकुर, शहिस्ता, जितेंद्र जीतू, बिलाल अहमद, मौ० आसिफ़, सानिया आदि का विशेष योगदान रहा।

एयरपोर्ट हादसा: कैब चालक के परिवार को मिली मदद, टर्मिनल-1 की छत गिरने से गई थी रमेश की जान

दिल्ली के इंदिरा गांधी अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर 28 जून को टर्मिनल-1 की छत गिरने की घटना में कैब चालक रमेश की मृत्यु हो गई थी। इस हादसे के बाद पीड़ित परिवार से मिलकर रिठाला विधानसभा से पूर्व विधायक प्रत्याशी मनीष चौधरी ने सांत्वना प्रकट करते हुए आर्थिक मदद का वादा किया था। अब सांसद योगेंद्र चंदोलिया ने पीड़ित परिवार को एक लाख रुपये का चेक प्रदान किया है।

दिल्ली। दिल्ली में इंदिरा गांधी इंटरनेशनल एयरपोर्ट पर बीते 28 जून को टर्मिनल-1 की छत गिरने की घटना में कैब चालक रमेश की मौत हो गई थी। रमेश विजय विहार में परिवार के साथ रहते थे। हादसे के बाद पीड़ित परिवार से मिलकर रिठाला विधानसभा से पूर्व विधायक प्रत्याशी मनीष चौधरी ने सांत्वना प्रकट करते हुए आर्थिक मदद का वादा किया था। ऐसे में दो अक्टूबर को सांसद योगेंद्र चंदोलिया के साथ वह पीड़ित परिवार मिलने पहुंचे। जहां उन्होंने पीड़ित परिवार को मदद के तौर पर एक लाख रुपये का चेक दिया।

सांसद योगेंद्र चंदोलिया ने परिवार को सांत्वना देते हुए सरकारी मदद में आ रही दिक्कतों को भारत सरकार के उड्डयन मंत्री से बात करके सुलझाने का वादा किया। मनीष चौधरी ने कहा कि भाजपा समाज के अंतिम व्यक्ति के साथ हमेशा खड़ी है। मृतक चालक के परिवार में उनकी पत्नी, दो बेटे और दो बेटिया हैं। सभी किराये के मकान में रहते हैं। इस मौके पर मंडल अध्यक्ष उमेश गिरी, पार्षद नरेंद्र सोलंकी, धर्मवीर शर्मा, जिला प्रभारी योगेश अत्रेय,रुण ठाकुर ,राहुल राय प्रदीप छोकर व विजय भण्डारी भी मौजूद रहें।

यमुना प्राधिकरण में फर्जीवाड़े का बड़ा खुलासा, करोड़ों के आवासीय भूखंड हथियाने का ऐसा चला खेल

परिवहन विशेष न्यूज

यमुना प्राधिकरण में फर्जीवाड़े का बड़ा खुलासा हुआ है। अधिकारियों ने अपने अधिकार क्षेत्र से बाहर जाकर कामर्शियल क्योस्क के आवंटियों को क्रियाशील प्रमाण पत्र जारी कर दिया। यह पूरा खेल प्राधिकरण की आवासीय भूखंड योजना के आरक्षित कोटे में सेंध लगाकर करोड़ों की कीमत के भूखंडों को हथियाने के लिए रचा गया था। मुख्य कार्यपालक अधिकारी ने जांच के लिए समिति गठित कर दी है।

ग्रेटर नोएडा। यमुना प्राधिकरण में फर्जी तरीके से क्रियाशील प्रमाण पत्र जारी किए गए है। अधिकारियों ने अपने अधिकार क्षेत्र से बाहर जाकर कॉमर्शियल क्योस्क के आवंटियों को क्रियाशील का प्रमाण पत्र जारी कर दिया। पूरा खेल प्राधिकरण की आवासीय भूखंड योजना के आरक्षित कोटे में सेंध लगाकर करोड़ों की कीमत के भूखंडों को हथियाने के लिए रचा गया।

मुख्य कार्यपालक अधिकारी ने जांच के लिए अपर मुख्य कार्यपालक अधिकारी की अध्यक्षता में समिति गठित कर दी है। समिति एक सप्ताह में अपनी रिपोर्ट देगी। जिन आवंटियों को क्रियाशील प्रमाण पत्र जारी हुए हैं। आवासीय भूखंड योजना में उनकी वरियता समाप्त कर सामान्य श्रेणी में डाल दिया गया है।

आवासीय श्रेणी में पांच प्रतिशत का आरक्षण

यमुना प्राधिकरण में कॉमर्शियल, संस्थागत, औद्योगिक श्रेणी के आवंटियों को आवासीय श्रेणी में पांच प्रतिशत का आरक्षण मिलता है। इसका फायदा उठाने के लिए कॉमर्शियल श्रेणी के आवंटियों ने प्राधिकरण के अधिकारियों से सांठगांठ कर खेल किया।

दस आवंटियों को क्रियाशील प्रमाण पत्र जारी

वाणिज्य विभाग ने क्योस्क योजना के दस आवंटियों को क्रियाशील प्रमाण पत्र जारी कर दिए। इसे प्रबंधक स्तर से जारी किया गया, इसके लिए बनी फाइल पर वाणिज्यिक विभाग के व्यक्ति सहायक, प्रबंधक सिद्धार्थ चौधरी के अलावा सलाहकार, उप-महाप्रबंधक वित्त अशोक कुमार एवं विशेष कार्याधिकारी राजेश कुमार ने भी हस्ताक्षर किए हैं।

प्रमाण पत्र को बैकडेट में जारी किया गया

प्राधिकरण के नियमानुसार क्रियाशील प्रमाण पत्र जारी करने का अधिकार अपर मुख्य कार्यपालक अधिकारी व मुख्य कार्यपालक अधिकारी को ही है। इसके बावजूद प्रबंधक सतर से क्रियाशील प्रमाण पत्र जारी किए गए। शुरुआती जांच में सामने आया कि इन प्रमाण पत्र को बैकडेट में जारी किया गया, ताकि आवंटियों को आवासीय भूखंड योजना में आरक्षित कोटे का लाभ दिया जा सके।

आवासीय योजना में आरक्षित कोटे के लिए भूखंडों की संख्या के सापेक्ष ही प्रमाण पत्र जारी

हुए ताकि सभी को भूखंड आवंटित हो सके। मुख्य कार्यापालक अधिकारी को शिकायत मिलने के बाद हुई प्राथमिक जांच में विभागीय अधिकारियों का फर्जीवाड़ा खुलकर सामने आ गया।

निरीक्षण रिपोर्ट के आधार पर होता है प्रमाण पत्र जारी

प्रमाण पत्र जारी करने से पहले संबंधित विभाग के सूचना पर नियोजन विभाग की टीम मौके पर जाकर कराए गए निर्माण की जांच करती है। नियोजन विभाग की रिपोर्ट के आधार पर प्रमाण पत्र जारी होता है, लेकिन इस मामले में कोई निरीक्षण नहीं किया। जिन दस क्योस्क के लिए क्रियाशील प्रमाण पत्र जारी किए गए, उसमें से केवल एक का ही निर्माण हुआ है, शेष क्योस्क की जगह अभी खाली जमीन पड़ी है।

मई से अगस्त के बीच की तारीख के जारी किए गए प्रमाण पत्र

क्योस्क योजना के आवंटियों को मई से लेकर अगस्त के बीच क्रियाशील प्रमाण पत्र जारी किए गए हैं। प्राधिकरण की आवासीय भूखंड योजना पांच जुलाई को निकाली गई थी। इस योजना में आवेदन के लिए 23 अगस्त अंतिम तिथि थी। अगस्त में जारी क्रियाशील प्रमाण पत्र 16 तारीख को जारी किया गया था। इसलिए आवंटी ने आवासीय भूखंड योजना में आरक्षण का लाभ लेने के लिए आवेदन कर दिया।

ऐसे बन जाते हैं दो हजार वर्गमीटर के भूखंड के मालिक

प्राधिकरण की 361 आवासीय योजना में 120 वर्गमीटर से लेकर दो हजार वर्गमीटर तक के आवासीय भूखंड हैं। इसमें 2.28 लाख से अधिक आवेदन मिले हैं। लेकिन कामर्शियल श्रेणी के आवंटियों के आरक्षित कोटे से सात से नौ वर्गमीटर का क्योस्क खरीदकर आवंटी 120 वर्गमीटर से लेकर 2000 वर्गमीटर के भूखंड का मालिक बनने के प्रयास में थे। कोर्ट में जितने भूखंड हैं, उतने ही क्रियाशील प्रमाण पत्र जारी किए गए हैं। इससे क्योस्क के आवंटियों को आवासीय भूखंड मिलना लगभग तय था।

एसीईओ श्रुति की अध्यक्षता में जांच समिति गठित की गई है। समिति एक सप्ताह में अपनी रिपोर्ट देगी, जो भी अधिकारी दोषी पाए जाएंगे, उनके खिलाफ कार्रवाई के लिए शासन को रिपोर्ट भेजी जाएगी। रिपोर्ट के आधार पर क्रियाशील प्रमाण पत्रों को निरस्त किया जाएगा। क्योस्क का आवंटन भी रद किया जा सकता है। - डॉ. अरुणवीर सिंह, सीईओ यमुना प्राधिकरण

बजरिया के पांच होटलों को पुलिस ने कराया सील, देह व्यापार का भंडाफोड़ होने के बाद कार्रवाई

गाजियाबाद में बजरिया के पांच होटलों में देह व्यापार का भंडाफोड़ होने के बाद जिला प्रशासन ने इन होटलों को सील करने की सिफारिश की है। इन होटलों के पास सराय एक्ट के तहत जिला प्रशासन से लाइसेंस नहीं है। 26 सितंबर को पुलिस ने इन होटलों में छापेमारी कर नौ युवतियों को रेस्क्यू किया था और नौ युवकों को गिरफ्तार किया था।

गाजियाबाद। बजरिया के जिन पांच होटलों में पुलिस ने देह व्यापार का पर्दाफाश किया है। इन पांचों होटल के पास सराय एक्ट के तहत जिला प्रशासन से लाइसेंस भी नहीं है। ऐसे में पांचों होटलों को सील करने की कार्रवाई की जाएगी, इसके लिए जिलाधिकारी ने संस्तुति कर दी है।

बजरिया के पांच होटलों में देह व्यापार की सूचना पर 26 सितंबर को एसीपी कोतवाली रितेश त्रिपाठी ने पुलिस टीम के साथ छापामारी कर नौ युवतियों को रेस्क्यू किया था। इस दौरान नौ युवकों को गिरफ्तार भी किया था। जिन होटलों में देह व्यापार का पर्दाफाश हुआ है, उसमें होटल आर्यदीप, होटल शुभम, होटल डबल ट्री, होटल पार्क टाउन, होटल क्विज शामिल हैं। होटल डबल ट्री, होटल क्विज, होटल पार्क टाउन और होटल आर्यदीप से रेस्क्यू की गई युवतियों ने पुलिस को बताया था कि होटल के संचालकों ने उनको नौकरी देने के बहाने बुलाया और देह व्यापार करा रहे थे।

होटल संचालक ही ग्राहकों से करते थे संपर्क

होटल संचालक ही ग्राहकों से संपर्क करते थे और उनसे रुपये लेते थे। पुलिस ने होटलों के लाइसेंस के बारे में जानकारी करने और उनको सील करने के लिए जिला प्रशासन को पत्र लिखा था। जांच में पता चला कि पांचों होटल बिना लाइसेंस के ही संचालित किए जा रहे थे।

यीडा की अंतिम सूची जारी, लाखों लोगों में किसकी लगी लॉटरी; ऐसे जानिए

यमुना प्राधिकरण ने आवासीय भूखंड योजना के आवेदकों की अंतिम सूची जारी कर दी है। यीडा ने बताया कि 10 अक्टूबर को पात्र आवेदकों को लॉटरी में शामिल किया जाएगा। यमुना प्राधिकरण ने पांच जुलाई को 361 भूखंड की योजना निकाली थी। इस योजना के लिए दो लाख से अधिक लोगों ने आवेदन किया है। पढ़िए पूरा अपडेट क्या है।

परिवहन विशेष न्यूज

यमुना प्राधिकरण ने आवासीय भूखंड योजना के आवेदकों की अंतिम सूची जारी कर दी है। यीडा ने बताया कि 10 अक्टूबर को पात्र आवेदकों को लॉटरी में शामिल किया जाएगा। यमुना प्राधिकरण ने पांच जुलाई को 361 भूखंड की योजना निकाली थी। इस योजना के लिए दो लाख से अधिक लोगों ने आवेदन किया है। पढ़िए पूरा अपडेट क्या है।

ग्रेटर नोएडा। YEIDA यमुना प्राधिकरण ने आवासीय भूखंड योजना के आवेदकों की सूची अपने पोर्टल पर अपलोड कर दी है। सूची में शामिल पात्र आवेदकों को 10 अक्टूबर को होने वाली लॉटरी में शामिल किया जाएगा। प्राधिकरण ने लॉटरी प्रक्रिया संपन्न कराने के लिए हाई कोर्ट के तीन सेवानिवृत न्यायाधीश की जूरी बनाई है।

Yeida Plot Scheme यमुना प्राधिकरण ने पांच जुलाई को 361 भूखंड की योजना निकाली थी। इस योजना में 120 वर्गमीटर, 162 वर्गमीटर, दो सौ वर्गमीटर, तीन सौ वर्गमीटर समेत एक हजार व दो हजार वर्गमीटर के भूखंड शामिल हैं। योजना में दो

लाख से अधिक लोगों ने आवेदन किया है।

पोर्टल पर जारी की सूची

Yeida New Scheme प्राधिकरण ने इन आवेदकों की सूची अपने पोर्टल पर जारी करते हुए 25 सितंबर तक आवेदन पत्रों की कमियों को दूर करने का मौका दिया था। जांच के बाद आवेदकों की अंतिम सूची प्राधिकरण ने गुरुवार को अपनी पोर्टल पर जारी कर दी है।

ऐसे जाने, लॉटरी लगी या नहीं

आवेदक अपनी आवेदन संख्या के जरिए जान सकते हैं कि वह पात्र की सूची में शामिल हैं या नहीं, जिन आवेदकों के नाम इस सूची में होंगे, उन्हें ही लॉटरी में शामिल होने का मौका मिलेगा। लॉटरी प्रकिया संपन्न कराने के लिए विशेष कार्याधिकारी शैलेंद्र भाटिया के नेतृत्व में समिति का गठन किया गया है।

प्राधिकरण के मुख्य कार्यपालक अधिकारी डॉ. अरुणवीर सिंह का कहना है कि 10 अक्टूबर को इंडिया एक्सपो मार्ट में आवासीय भूखंड योजना की लॉटरी निकाली जाएगी।

योगी जी... जेई और पटवारी मांग रहे हैं रिश्वत, किसान ने पत्र लिखकर की कार्रवाई की मांग

ग्रेटर नोएडा में एक किसान ने प्राधिकरण के एक जेई और पटवारी पर रिश्वत मांगने का आरोप लगाया है। किसान ने मुख्यमंत्री से शिकायत की है। आरोप है कि जेई ने किसान को धमकी दी और उसके खिलाफ एफआईआर दर्ज कराने की धमकी दी। किसान ने मुख्यमंत्री को पत्र लिखकर कार्रवाई की मांग की है। जानिए पूरा मामला क्या है।

ग्रेटर नोएडा। ग्रेटर नोएडा में खोदना कलां गांव के किसान ने प्राधिकरण के एक जेई और पटवारी पर रिश्वत मांगने का आरोप लगाया है। इसकी शिकायत मुख्यमंत्री से की है।

किसान अमरजीत सिंह ने शिकायत पत्र में लिखा कि गांव में खसरा संख्या 413 में आबादी दर्ज है। यह प्राधिकरण के नक्शे में भी दर्ज है।

आरोप है कि जब वह पुश्तैनी जमीन पर मकान बना रहे थे तो ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण का एक जेई आया और उनके मकान का निर्माण कार्य बंद कर दिया। जेई ने धमकी दी कि उनके खिलाफ एफआईआर दर्ज कराएगा।

आरोप लगाया कि जेई ने रिश्वत की मांग की। मुख्यमंत्री को पत्र लिख कार्रवाई की मांग की है।

सेहत पर भारी मिलावटी खाद्य सामग्री

खाने-पीने के शौकीन अथवा महानगरों में नौकरी आदि के चलते कम मूल्य लागत वाला भोजन तलाशने वाले भारतीयों के लिए यह अनिवार्य हो जाता है कि स्वाद एवं सस्ते के चक्कर में न पडक़र स्वच्छता मानकों एवं साफ-सफाई को अपनी सेहत के दृष्टिगत स्वच्छ एवं पौष्टिक भोजन को अपनी प्राथमिकता में रखें। अतिरिक्त सतर्कता का पालन करने से ही हम अपने स्वास्थ्य को सुरक्षित बना सकते हैं'

भारत में बढ़ती आबादी के कारण और मांग एवं आपूर्ति में अंतर के चलते प्रायः खाद्य वस्तुओं की किल्लत और दामों में बढ़ोत्तरी होती ही रहती है और इसी किल्लत का फायदा जमाखोरों की टोलियां उठाने से नहीं चूकती हैं, तो वहीं घटिया एवं मिलावटी चीजें बेचने वालों की पौबारह हो जाती है। भारत में इन दोनों तिरुमला तिरुपति देवस्थानम द्वारा श्रद्धालुओं को दिए जाने वाले लड्डुओं को मिलावटी देसी घी से बनाने से भक्तों की धार्मिक आस्था आहत होने का मुद्दा भी चर्चा में है। देवस्थानम को देसी घी की आपूर्तिकर्ता कंपनी एआर डेयरी फूड प्राइवेट लिमिटेड से खाद्य नियामक ने पूछा है कि खाद्य सुरक्षा एवं मानक विनियमन 2011 के प्रावधानों के उल्लंघन के लिए उसका केंद्रीय लाइसेंस निलंबित क्यों न कर दिया जाए? आज भारत में मिलावट का कारोबार उस स्तर को पार कर चुका है जहां खाद्य उत्पादों में सस्ते और घटिया पदार्थ मिलाकर बेईमान व्यापारी व विक्रेता सामान की मात्रा को बढ़ा देते हैं और भारतीयों की जान की कीमत पर भारी मुनाफा कमाते हैं। ऐसा अनुमान है कि 60 करोड़ लोग अर्थात विश्व में लगभग 10 में से 1 व्यक्ति हर वर्ष दूषित भोजन खाने के कारण बीमार पड़ते हैं तथा 420000 लोग मर भी जाते हैं।

भारत में दूध और डेयरी उत्पाद, वसा और तेल, फल और सब्जियां, अनाज, कॉफी, चाय, शहद और मसाले आदि सहित लगभग हर खाद्य सामग्री में मिलावट का प्रतिशत अत्यधिक बढ़ गया है और स्वच्छता मानकों की बुरी तरह से अनदेखी हो रही है। इतना ही नहीं, भारत के कई क्षेत्रों से ऐसे भी वीडियो की सोशल मीडिया में भरमार हो रखी है जिसमें समोसे, चाट, ब्रेड, कुल्फी, प्लास्टिक के चावल और गुलाब जामुन से भरी कड़ाही में पेशाब करते युवक और गोल गप्पे वाले जलजीरा पानी से ही हाथ मुंह धोने, गंदे हाथ पैरों से आलू और आटा गूंथने जैसे कृत्यों द्वारा गंदगी से परिपूर्ण खाद्य सामग्री आम लोगों को परोसी जा रही है। ऐसे कृत्य न केवल निंदनीय हैं अपितु दोषी लोगों के विरुद्ध कानूनी कार्रवाई की मांग भी करते हैं। सवाल उठता है कि आखिर ऐसी गतिविधियों में संलिप्त लोगों को तत्काल जेल की सलाखों के पीछे क्यों नहीं डाला जाता है? विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार हानिकारक बैक्टीरिया, वायरस, परजीवी या रासायनिक पदार्थों से युक्त असुरक्षित भोजन 200 से अधिक बीमारियों का कारण बनता है जिसमें डायरिया से लेकर कैंसर तक शामिल हैं। निम्न और मध्यम आय वाले देशों में असुरक्षित भोजन के कारण चिकित्सा व्यय में हर साल 110 बिलियन अमेरिकी डॉलर का नुकसान होता है। संयुक्त राष्ट्र खाद्य एवं कृषि संगठन के महानिदेशक डा. कू डोंग्यू के अनुसार, 'हमें अपने भोजन की पहचान, गुणवत्ता और सुरक्षा पर एक आम समझ की जरूरत है। लेकिन भारत में दूध में पानी मिलाने, नकली दूध, घी में केमिकल, दाल में सिंथेटिक रंग और वैक्स कोटिंग, सब्जियों में हॉर्मोन के इंजेक्शन तथा सिंथेटिक रंग, हर्बल उत्पादों में एलोपैथिक दवाइयां तथा केमिकल्स, सौंदर्य प्रसाधनों में और देसी घी बनाने में पशुओं की चर्बी होने की जानकारी किसी से छुपी हुई नहीं है। खाद्य अपमिश्रण से आखों की रोशनी जाना, हृदय संबंधित रोग, लीवर खराब होना, कुष्ठ रोग, आहार तंत्र के रोग, पक्षाघात व कैंसर जैसे असाध्य रोग हो सकते हैं। हिमाचल प्रदेश में मिलावटी खाद्य पदार्थों की समस्या से निपटने के लिए राज्य सरकार कुछ उपायों पर काम करती दिख रही है। राज्य में फूड फोरेंसिक यूनिट स्थापित करने की मंजूरी मिल चुकी है।

यह यूनिट गुजरात के बाद देश की दूसरी फूड फोरेंसिक यूनिट होगी। यह यूनिट खाद्य पदार्थों की गुणवत्ता और संदिग्ध खाद्य मामलों की जांच करेगी। इस यूनिट से खाद्य पदार्थों में कीटनाशकों, रासायनिक शर्करा और स्टीरॉइड की मात्रा का पता लगाया जा सकेगा। राज्य सरकार को मिलावटी और बासी खाद्य पदार्थों से निपटने के लिए केंद्रीय उपभोक्ता मामले, खाद्य और सार्वजनिक वितरण मंत्रालय से 37 लाख रुपे की मोबाइल फूड सेफ्टी वैन भी मिली है। खाद्य अपमिश्रण के परीक्षण के लिए मैसूर, पुणे, गाजियाबाद एवं कोलकाता में भारत सरकार द्वारा चार केन्द्रीय प्रयोगशालाएं व्यवस्थित रूप से स्थापित की गई हैं। खाद्य अपमिश्रण एवं रेहड़ी फड़ी वालों द्वारा लोगों को गंदा और घटिया खाने-पीने की वस्तुएं बेचने से आगाह करने के उद्देश्य से केंद्र सरकार द्वारा 'ईट राइट इंडिया मूवमेंट' की पहल की गई है, जिसका उद्देश्य भारत में स्वस्थ खाने की आदतों और खाद्य सुरक्षा को बढ़ावा देना है। भारतीय खाद्य सुरक्षा एवं मानक प्राधिकरण ने 'ईट राइट इंडिया' अभियान के माध्यम से सभी भारतीयों के लिए सुरक्षित, स्वस्थ और पोषक भोजन सुनिश्चित करने के लिए देश की खाद्य प्रणाली को बदलने के लिए बड़े पैमाने पर प्रयास शुरू किया है। इस प्रकार, 'सही भोजन बेहतर जीवन' टैगलाइन इस आंदोलन की नींव बनाती है।

ईट राइट मूवमेंट अभियान तीन प्रमुख विषयों पर आधारित है- सुरक्षित खाएं, व्यक्तिगत और आसपास की स्वच्छता सुनिश्चित करें, स्वस्थ खाएं, आहार विविधता और संतुलित आहार को बढ़ावा दें एवं स्थानीय और मौसमी सब्जियों/भोजन को बढ़ावा दें, भोजन के नुकसान को रोकें। खाने-पीने के शौकीन अथवा महानगरों में नौकरी आदि के चलते कम मूल्य लागत वाला भोजन तलाशने वाले भारतीयों के लिए यह अनिवार्य हो जाता है कि स्वाद एवं सस्ते के चक्कर में न पडक़र स्वच्छता मानकों एवं साफ-सफाई को अपनी सेहत के दृष्टिगत स्वच्छ एवं पौष्टिक भोजन को अपनी प्राथमिकता में रखें। केवल अतिरिक्त सतर्कता और जागरूकता का पालन करने से ही हम अपने स्वास्थ्य को सुरक्षित बना सकते हैं और अपमिश्रित एवं गंदी खाद्य सामग्री बेचने वालों के कुत्सित इरादों को परास्त कर सकते हैं।

अनुज आचार्य

– :सौजन्य :–
ईवी ड्राइव द फ्यूचर
EV
Drive the Future

सदस्यता अभियान के लिए विशेष रूप से कराया तैयार ई-रिक्शा

परिवहन विशेष न्यूज

रतलाम के भाजपा जिला अध्यक्ष प्रदीप उपाध्याय इन दिनों रतलाम शहर में ई-रिक्शा से घूमते नजर आ रहे हैं। अपने इस नवाचार के चलते हुए भाजपा कार्यकर्ताओं के साथ ही आम जनता के बीच भी चर्चा का विषय बन गए हैं।

यह ई-रिक्शा जिला अध्यक्ष प्रदीप उपाध्याय ने भाजपा सदस्यता अभियान और नवरात्रि में होने वाले आयोजनों के दौरान आने-जाने के लिए विशेष रूप से तैयार कराया है। वर्तमान में वह सदस्यता अभियान के लिए ई-रिक्शा का उपयोग कर रहे हैं और शहर में घूम कर भाजपा के सदस्य बना रहे हैं।

जिला अध्यक्ष प्रदीप उपाध्याय का कहना है कि दो पहिया वाहन पर जहां दो लोग ही बैठ सकते हैं, वही ई-रिक्शा में साथ में चार लोग सफर कर पा रहे हैं। चार पहिया वाहन का उपयोग करने पर प्रमुख बाजार में यातायात व्यवस्था की दृष्टि से दिक्कत आती है। नवरात्रि पर्व के दौरान अलग-अलग जगह आयोजन में भी जाना होता हैं। जल्दी पहुंचने और जाम से बचने के लिए ई-रिक्शा सबसे बढ़िया विकल्प है। पर्यावरण की दृष्टि से भी यह सही है इसलिए वह ई-रिक्शे का उपयोग कर रहे हैं।

पांच साल की उम्र तय होते ही कबाड़ घोषित हो जाएंगे ई-रिक्शा

परिवहन विशेष न्यूज

ई-रिक्शा की आयु पांच वर्ष निर्धारित हो गई तो, गोरखपुर में 1896 ई-रिक्शा कबाड़ हो जाएंगे। 30 सितंबर को यह सभी ई-रिक्शा पांच वर्ष पूरे कर लेंगे। गोरखपुर परिवहन विभाग ने जर्जर हो चुके ई-रिक्शा के संचालन पर रोक लगाने, शहर की सडकों को जाम से मुक्ति दिलाने तथा दुर्घटनाओं पर रोक लगाने के लिए आयु सीमा निर्धारित करने की जोर-शोर से तैयारी शुरू कर दी है। जल्द ही ई-रिक्शा की आयु 5 से 7 वर्ष हो सकती है।

परिवहन विभाग ने डीजल और पेट्रोल वाहनों की 10 से 15 वर्ष की आयु सीमा तो निर्धारित कर दी है, लेकिन ई-रिक्शा की कोई उम्र तय नहीं है। स्थिति यह है कि गोरखपुर की सड़कों, चौराहों और गलियों में जर्जर हो चुके ई-रिक्शा मनमाने ढंग से फर्राटा भर रहे हैं। नियमानुसार फिटनेस जांच भी नहीं कराते हैं। जबकि, ई-रिक्शा का प्रत्येक दो साल पर फिटनेस जांच अनिवार्य होती है। चार से पांच साल में ई-रिक्शा चलने लायक नहीं रह पाते।

इसे विभागीय उदासीनता कहें या वाहन स्वामियों की लापरवाही। जिले में लगभग दस हजार ई-रिक्शा पंजीकृत हैं। जिनमें 3 हजार अनफिट हैं, जो हर पल दुर्घटना को दावत दे रहे हैं। एक तो चालकों के पास ड्राइविंग लाइसेंस नहीं, ऊपर से यातायात के नियमों का पालन भी नहीं कर रहे। अनफिट ई-रिक्शा गोरखपुर में दुर्घटना ही नहीं जाम के कारण भी बनते जा रहे हैं। स्थिति यह है कि पंजीकृत ई-रिक्शा के लिए लगभग 50 चालकों के पास ही ड्राइविंग लाइसेंस है। 12 से 16 साल के बच्चे ही नहीं 60 साल से अधिक उम्र के वरिष्ठ भी बिना लाइसेंस के ई-रिक्शा लेकर दौड़ रहे हैं। इसका खामियाजा आमजन को भुगतना पड़ रहा है।

परिवहन विभाग में अब सफेद रंग के ई-रिक्शा का ही पंजीकरण और फिटनेस प्रमाण पत्र बन रहा है। ऐसे में जो वाहन स्वामी रंगीन ई-रिक्शा चला रहे हैं वे फिटनेस प्रमाण पत्र की अवधि समाप्त होने के बाद भी लापरवाह बने हुए हैं। वे न ई-रिक्शा का रंग बदलकर सफेद करा रहे और न फिटनेस जांच करा रहे हैं।

एक दिसंबर 2022 को संभागीय परिवहन प्राधिकरण की बैठक में ई-रिक्शा का रूट निर्धारित करने का निर्णय लिया गया था। वर्ष 2023 में रूट का निर्धारण तो हुआ लेकिन उसपर आम सहमति नहीं बन पाई। अभी भी ठंडे बस्ते में है। शहर में मनमाने ढंग से चल रहे ई-रिक्शा के सवाल पर संभागीय परिवहन प्राधिकरण के सचिव व संभागीय परिवहन अधिकारी रामबृक्ष सोनकर ने बताया कि ई-रिक्शा का रूट बहुत पहले ही निर्धारित हो गया है। संबंधित विभाग और अधिकारियों को निर्धारित रूट पर ई-रिक्शा का संचालन सुनिश्चित करना चाहिए।

बांदा के ई-रिक्शा में लगाए जायेंगे क्यूआर कोड

परिवहन विशेष न्यूज

बांदा पुलिस ने सभी ई-रिक्शा का क्यूआर कोड जारी करने का निर्देश जारी किया है। जिसमें उस रिक्शा चालक और मालिक का पूरा डिटेल दर्ज रहेगा। जिससे हर बैठने वाले पैसेंजर उस रिक्शा चालक का पूरा डिटेल क्यूआर कोड से जान सकेंगे। एसपी ने ट्रैफिक पुलिस टीम के साथ ई-रिक्शा चालकों के साथ बैठक की है। नवरात्रि के पहले दिन से ही इसकी शुरू की गई है।

सत्यापन के उपरांत प्रत्येक ई रिक्शा को एक विशेष कर (क्यूआर) कोड प्रदान किया जाएगा। यह (क्यूआर) कोड चालकों की पहचान के रूप में कार्य करेगा। यह सुनिश्चित किया जा रहा है कि केवल पत्र कानून मान्य और विश्वसनीय व्यक्ति ही ई रिक्शा चला सकेंगे। शहर में नाबालिग द्वारा ई-रिक्शा चलाने की घटनाओं को रोकने के लिए सख्त कदम उठाए जाएंगे। किसी भी नाबालिग को ई-रिक्शा चलाने की अनुमति नहीं होगी।

ई-रिक्शा से संबंधित चोरी लूटपाट छेड़खानी और अन्य प्राथमिक गतिविधियों पर रोक लगाने के लिए सत्यापन प्रक्रिया शुरू की जा रही है। सत्यापन से यह सुनिश्चित होगा कि केवल वही चालक रिक्शा चलाएंगे जिनका चरित्र प्रमाणित हो। जो भी आवश्यक कानूनी प्रक्रियाओं का पालन करते हैं। शहर में सुरक्षा व्यवस्था को मजबूत बनाने में सहायता मिलेगी। बैठक में यह बताया कि आगामी एक या दो दिनों में ई-रिक्शा (क्यूआर) कोड सेवाओं का शुभारंभ किया जाएग। यह प्रक्रिया ई-रिक्शा चालकों को डिजिटल प्लेटफॉर्म प्रदान करेगा। जो उनके रोजगार को सहयोग प्रदान करेगा।

अब देश में चलेंगी हाइड्रोजन ट्रेने

परिवहन विशेष न्यूज

भारत में दुनिया का सबसे बड़ा रेल नेटवर्क है। समय के साथ भारतीय रेलवे लगातार प्रगति कर रही है। कोयले से चलने वाले इंजन से लेकर डीजल और फिर इलेक्ट्रिक तक, अब रेलवे एक और धमाका करने जा रही है। भारतीय रेलवे जल्द ही हाइड्रोजन से चलने वाली ट्रेनें शुरू करने जा रही है।

ईटी नाउ की एक रिपोर्ट के मुताबिक रेलवे जीरो कार्बन एमिशन लक्ष्य के साथ लगातार नए नवाचार पर ध्यान दे रही है। हाइड्रोजन रेल भी इसी प्रोजेक्ट का हिस्सा है। देश की पहली हाइड्रोजन ट्रेन अगले साल शुरू हो सकती है।

भारतीय रेलवे इस साल के अंत तक इसका प्रोटोटाइप बनाकर टेस्टिंग भी शुरू करने वाली है। स्वीडन, जर्मनी, फ्रांस और चीन के बाद भारत हाइड्रोजन ट्रेन चलाने वाला 5वां देश बनने की ओर अग्रसर हैं।

हाइड्रोजन फ़्यूल से चलने वाली ट्रेन कार्बन डाइऑक्साइड और नाइट्रोजन जैसे प्रदूषण युक्त कारकों का उत्सर्जन नहीं करती। इस ट्रेन को चलाने के लिए डीजल इंजन की जगह हाइड्रोजन फ्यूल सेल्स लगाए जाते हैं।

हाइड्रोजन फ्यूल सेल्स एक केमिकल रिएक्शन के जरिए हाइड्रोजन और ऑक्सीजन को बदलकर इलेक्ट्रिक पावर पैदा करती है। इस पावर की मदद से ट्रेन को चलाई जाती है। रेलवे इसके लिए आवश्यक इन्फ्रास्ट्रक्चर पर काम कर रही है।

भारतीय रेलवे के मुताबिक अगले साल 35 से अधिक हाइड्रोजन फ्यूल वाली ट्रेनें चलायी जाएंगी। रिपोर्ट के मुताबिक पहली हाइड्रोजन ट्रेन दिल्ली डिवीजन को मिलेगी और जींद-सोनीपत रूट पर चलेगी।

भारतीय रेलवे के मुताबिक ज्यादातर हाइड्रोजन फ्यूल वाली ट्रेनें हेरिटेज और पहाड़ी रास्तों पर चलायी जाएगी। इन ट्रेनों के परिचालन से हेरिटेज मार्ग पर प्रदूषण कम होगा।

रिपोर्ट की माने तो हाइड्रोजन ट्रेन का परिचालन दार्जिलिंग हिमालयन रेलवे, कालका-शिमला रेलवे, कांगड़ा वैली और नीलगिरी माउंटेन जैसे रूटों पर की जाएगी। इन रूटों पर आवश्यक इन्फ्रा का विकास पर ध्यान दिया जा रहा हैं।

भारतीय रेलवे ने हाइड्रोजन ट्रेन प्रोजेक्ट के लिए 2800 करोड़ रुपये आवंटित किए हैं। इसके अलावा हेरिटेज रूट पर हाइड्रोजन रेल से जुड़े इंफ्रास्ट्रक्चर के विकास के लिए भी अलग से 600 करोड़ रुपये खर्च किए जाएंगे।

नए हाइड्रोजन ट्रेन का डिजाइन कैसा होगा, इसकी जानकारी फिलहाल नहीं है। माना जा रहा है कि ये 6 कोच वाली ट्रेनें होंगी और इनमें कई एडवांस फीचर्स भी देखने को मिलेंगे।

ग्रीव्स इलेक्ट्रिक मोबिलिटी ने कांगड़ा में अतिरिक्त सर्विस आउटलेट किया शुरू

परिवहन विशेष न्यूज

ग्रीव्स इलेक्ट्रिक मोबिलिटी प्राइवेट लिमिटेड ने अपने ग्राहकों को बेहतर आफ्टर सेल सर्विसेज उप्लब्ध करवाने के किये आज कांगड़ा में नया सर्विस आउटलेट शुरू किया।

कांगड़ा में नया सर्विस आउटलेट ब्रांड के एम्पियर केयर अभियान के अंतर्गत इस क्षेत्र में ग्राहकों को तेज,सुगम और आसान आफ्टर सेल्स सर्विस स्पोर्ट प्रदान करेगा।

ग्रीव्स इलेक्ट्रिक मोबिलिटी के सीओओ राम राजप्पा ने कहा हमें कांगड़ा में एम्पियर का विस्तार करने की खुशी है।

इन उभरते हुए बाजारों में बढ़ती मांग भारत में नई व अधिक सस्टेनेबल तकनीकों को तेजी से अपनाए जाने का प्रमाण है।

एम्पियर में हम इस मांग को पूरा करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। साथ ही एम्पियर केयर के माध्यम से हम इस क्षेत्र में आफ्टर सेल्स सर्विस सपोर्ट द्वारा सेवा के उत्कृष्ट मानक स्थापित करके ग्राहकों के अनुभव में सुधार लाना चाहते हैं।

हम भारत में अंतिम बिंदु तक सस्टेनेबल मोबिलिटी प्रदान करने का अपना उद्देश्य प्राप्त करने के लिए इलेक्ट्रिक टू व्हीलर्स की मांग को बढ़ावा देकर उसे पूरा करते रहेंगे।

एम्पियर के उत्पाद पोर्टफोलियो में श्रेणी की सर्वश्रेष्ठ विशेषताओं और बेहतरीन परफॉर्मेंस के साथ नेक्सस मैग्नस और रियो जैसे मॉडल शामिल हैं।

द नेक्स बिग थिंग की उपाधि के साथ नेक्सस 93 किमी प्रति घंटे की सर्वोच्च गति के साथ चल सकता है।

इसमें 3 के डब्लू एच एल एफ पी बैटरी लगी है जो 30 प्रतिशत ज्यादा बैटरी लाइफ के साथ रेंज और परफॉर्मेंस की फिक्र को खत्म करती है।

इसने सस्टेनेबल मोबिलिटी को आम जनता तक पहुँचा दिया है।

कांगड़ा में सोहम एम्पियर केयर सर्विस आउटलेट ग्राहकों को इन वाहनों की सर्विसिंग का सुगम अनुभव प्रदान करेगा।

फेस्टिव सीजन में ओला ने दिया बेहतरीन बॉस ऑफर, सिर्फ 49999 रुपये में मिलेगा S1 स्कूटर

परिवहन विशेष न्यूज

देश की प्रमुख इलेक्ट्रिक दो पहिया वाहन निर्माता OLA की ओर से बेहतरीन फीचर्स के साथ स्कूटर्स को ऑफर किया जाता है। कंपनी ने Festive Season के दौरान ग्राहकों को तगड़े डिस्काउंट (BoSS) के साथ स्कूटर ऑफर किया है। किस रेंज के लिए ऑफर्स को दिया गया है। कब तक इसका फायदा उठाया जा सकता है। किस कीमत पर स्कूटर को खरीदा जा सकता है। आइए जानते हैं।

दिल्ली। देश की प्रमुख इलेक्ट्रिक दो पहिया वाहन निर्माता OLA की ओर से भारतीय बाजार में कई इलेक्ट्रिक स्कूटर्स को ऑफर किया जाता है। कंपनी की ओर से Festive Season के शुरू होते ही BoSS स्कीम को ऑफर किया गया है। इसमें किस तरह का फायदा उठाया जा सकता है। कंपनी की ओर से किस कीमत पर स्कूटर को ऑफर किया जा रहा है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

शुरू हुई BoSS सेल

ओला की ओर से BoSS नाम के ऑफर को दिया गया है। इसे Biggest OLA Season Sale के तौर पर शुरू किया गया है। जिसमें कंपनी बेहद कम कीमत पर अपने स्कूटर को ऑफर कर रही है। इसके साथ ही कई और ऑफर्स को भी दिया जा रहा है।

किस कीमत पर ऑफर किया स्कूटर

कंपनी ने सिर्फ 49999 रुपये की कीमत पर OLA S1 को ऑफर किया है। यह ऑफर OLA S1X के 2 kWh वेरिएंट पर दिया जाएगा। साथ ही कंपनी ने यह भी साफ कर दिया है कि यह ऑफर सीमित स्टॉक पर ही दिया जाएगा।

होगी ज्यादा बचत

49999 रुपये में स्कूटर ऑफर करने के अलावा कंपनी की ओर से BoSS के तहत S1 2kWh पर 25 हजार रुपये की छूट के साथ ही बाकी S1 पोर्टफोलियो के स्कूटर को खरीदने पर 15 हजार रुपये तक की छूट दी जा रही है। एक्सचेंज बोनस के तौर पर पांच हजार रुपये, छह हजार रुपये की कीमत के 140 से ज्यादा मूव ओएस फीचर्स, सात हजार रुपये तक की आठ साल की बैटरी वारंटी, तीन हजार रुपये तक के हाइपर चार्जिंग क्रेडिट को भी दिया जा रहा है।

आया रेफरल प्रोग्राम

ओला की ओर से रेफरल प्रोग्राम को भी लाया गया है। जिसके तहत हर एक रेफरल पर तीन हजार रुपये की छूट दी जाएगी और रेफरी को दो हजार रुपये का डिस्काउंट भी मिल सकता है। टॉप 100 रेफरर्स को 1111111 रुपये तक के पुरस्कार दिए जाएंगे। इसके अलावा कंपनी की ओर से एक्सेसरीज पर भी अतिरिक्त ऑफर दिए जा रहे हैं।

Ola S1x 2 kWh की रेंज और फीचर्स

ओला की ओर से सबसे कम कीमत वाले इलेक्ट्रिक स्कूटर के तौर पर S1x को ऑफर किया जाता है। इसके सबसे सस्ते वेरिएंट में 2kWh की क्षमता की बैटरी को दिया जाता है। जिसे फुल चार्ज के बाद ईको मोड पर 84 किलोमीटर और नॉर्मल मोड पर 71 किलोमीटर तक चलाया जा सकता है। इसमें 2.7 kW की क्षमता की मोटर मिलती है जिससे आठ पीएस की पावर मिलती है और इसकी टॉप स्पीड 95 किलोमीटर प्रति घंटा तक है। इसमें 4.3 इंच एलसीडी इंस्ट्रूमेंट कंसोल, एलईडी लाइट्स, ईको, नॉर्मल और स्पोर्ट्स ड्राइविंग मोड्स, ब्लूटूथ कनेक्टिविटी, 34 लीटर अंडरसीट स्टोरेज, फ्रंट और रियर में ड्रम ब्रेक के साथ 12 इंच के पहियों को दिया जाता है।

बिक्री में आई गिरावट

बीते महीने के दौरान ओला की बिक्री में गिरावट दर्ज की गई है। इसका सबसे बड़ा कारण आफ्टर सेल सर्विस में ग्राहकों को परेशानी का होना है। कई ग्राहकों की ओर से पिछले कुछ समय में अपनी शिकायत को सोशल मीडिया पर भी शेयर किया है।

भारतीय छात्र यूरोप में आईटी, फार्मा और फैशन पाठ्यक्रम क्यों चुन रहे हैं?

विजय गर्ग

आईसीईएफ मॉनिटर के 2022 के एक अध्ययन के अनुसार, यूके, जर्मनी और फ्रांस जैसे देशों ने बड़ी संख्या में छात्रों को आकर्षित किया, खासकर भारत और चीन से। आंकड़ों से पता चला कि अकेले उस वर्ष इन क्षेत्रों से कुल 210,000 छात्र नामांकित हुए थे। इस स्थिर वृद्धि का एक कारण यूरोपीय देशों द्वारा अपनाया गया सक्रिय रुख है।

भारतीय छात्र आईटी क्यों चुन रहे हैं? हाल के वर्षों में, भारतीय छात्रों ने वैश्विक रुझानों और अंतरराष्ट्रीय प्रदर्शन के वादे के अनुरूप पाठ्यक्रमों की एक विस्तृत श्रृंखला का चयन करते हुए यूरोपीय विश्वविद्यालयों में बढ़ती रुचि दिखाई है। जबकि सूचना प्रौद्योगिकी (आईटी) और फार्मास्यूटिकल्स में पारंपरिक कार्यक्रम उत्कृष्ट कैरियर संभावनाओं के कारण लोकप्रिय बने हुए हैं, वहीं फैशन, ब्रांडिंग और विलासिता जैसे अपरंपरागत विषयों की ओर उल्लेखनीय बदलाव आया है। यह बदलाव पहली नज़र में आश्चर्यजनक लग सकता है, लेकिन यह बड़ी संभावनाओं वाले विशिष्ट उद्योगों की तलाश कर रहे छात्रों द्वारा सोचा-समझा कदम है। उदाहरण के लिए, फैशन पावरहाउस कहे जाने वाले फ्रांस और इटली जैसे देशों में फैशन, ब्रांडिंग या लक्जरी में एमबीए करने से कई अवसरों के द्वार खुल सकते हैं। ये देश ढेर सारे घरेलू और लक्जरी ब्रांडों का घर हैं, जो उन्हें फैशन और लक्जरी उद्योगों में खुद को स्थापित करने का लक्ष्य रखने वाले छात्रों के लिए आदर्श स्थान बनाते हैं। इन रास्तों को चुनकर, छात्र अत्यधिक प्रतिस्पर्धी और विशिष्ट क्षेत्रों में सफल होने के लिए रणनीतिक रूप से खुद को तैयार कर रहे हैं। इन विशिष्ट पाठ्यक्रमों के अलावा, भारतीय छात्र औद्योगिक इंजीनियरिंग जैसे उन्नत, उद्योग-विशिष्ट कार्यक्रमों और उद्योग 4.0 से जुड़े क्षेत्रों की ओर भी आकर्षित हो रहे हैं। जैसे-जैसे यूरोप तकनीकी प्रगति और औद्योगिक नवाचार को अपनाता है, ये पाठ्यक्रम उभरते वैश्विक बाजार में सफलता का मार्ग प्रदान करते हैं। एक दीर्घकालिक बदलाव हालाँकि यूरोपीय विश्वविद्यालयों के प्रति यह रुझान हालिया विकास जैसा लग सकता है, लेकिन पिछले कुछ वर्षों में यह धीरे-धीरे गति पकड़ रहा है। आईसीईएफ मॉनिटर के 2022 के एक अध्ययन के अनुसार, यूके, जर्मनी और फ्रांस जैसे देशों ने बड़ी संख्या में छात्रों को आकर्षित किया, खासकर भारत और चीन से। आंकड़ों से पता चला कि अकेले उस वर्ष इन क्षेत्रों से कुल 210,000 छात्र नामांकित हुए थे। इस स्थिर वृद्धि का एक कारण यूरोपीय देशों द्वारा अपनाया गया सक्रिय रुख है। उदाहरण के लिए, फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रॉन ने 2030 तक फ्रांस में 30,000 छात्रों की मेजबानी करने के एक महत्वाकांक्षी लक्ष्य की घोषणा की, जो अधिक अंतरराष्ट्रीय छात्रों को आकर्षित

करने के स्पष्ट इरादे का संकेत देता है। हालाँकि हर यूरोपीय देश ऐसी साहसिक घोषणाएँ नहीं कर सकता है, लेकिन उनकी नीतियाँ भारत सहित विदेशी छात्रों के प्रति एक स्वागत योग्य रवैया दर्शाती हैं। यूरोप में अध्ययन करने की योजना बना रहे भारतीय छात्रों के लिए, आवास और वीज़ा प्रक्रिया जैसी व्यावहारिक चिंताएँ अक्सर दिमाग में सबसे ऊपर होती हैं। हालाँकि, कई संस्थाएँ और संगठन संक्रमण को आसान बनाने के लिए व्यापक समर्थन प्रदान करते हैं। ऐसे समर्पित मंच हैं जो विश्वसनीय और सुविधाजनक छात्र आवास सेवाएं प्रदान करते हैं। अधिकांश यूरोपीय विश्वविद्यालय किफायती दरों पर परिसर में शयनगृह भी प्रदान करते हैं। इसके अतिरिक्त, छात्र उन साथी भारतीयों के व्यापक नेटवर्क से लाभ उठा सकते हैं जो मार्गदर्शन और समर्थन की पेशकश करते हुए पहले ही यह कदम उठा चुके हैं। जब वीजा की बात आती है, तो विश्वविद्यालयों और शिक्षा सलाहकारों के पास अक्सर इन-हाउस विशेषज्ञ होते हैं जो प्रक्रिया के माध्यम से छात्रों का मार्गदर्शन करते हैं। ये विशेषज्ञ आवश्यक फाइलें बनाने में मदद करते हैं और यह सुनिश्चित करते हैं कि वीजा आवेदन समय पर और कुशल तरीके से पूरे हो जाएं, जिससे छात्रों के लिए विदेश में अपनी पढ़ाई शुरू करने का रास्ता आसान हो जाए। एसओपी और अध्ययन के बाद के अवसरों को नेविगेट करना यूरोपीय विश्वविद्यालयों में अंतर्राष्ट्रीय छात्रों के लिए आवश्यकताएँ अलग-अलग हैं। आम तौर पर, छात्रों को कुछ विश्वविद्यालयों में अपनी शैक्षणिक और भाषा दक्षता प्रदर्शित करनी होती हैआईईएलटीएस बैंड स्कोर की आवश्यकता होती है जबकि अन्य को नहीं। ये मानक संचालन प्रक्रियाएं (एसओपी) यूरोप में कठोर शैक्षणिक माहौल के लिए एक छात्र की तैयारी का आकलन करने के लिए डिज़ाइन की गई हैं। एक बार जब छात्र अपनी पढ़ाई पूरी कर लेते हैं, तो नौकरी की संभावनाएं आशाजनक होती हैं। मजबूत तकनीकी कौशल और वैश्विक मानसिकता से लैस भारतीय छात्र अक्सर खुद को यूरोप भर की प्रतिष्ठित कंपनियों में पाते हैं। वास्तव में, कई लोग न केवल शिक्षा की गुणवत्ता के लिए बल्कि कार्य-जीवन संतुलन और आकर्षक वेतन के लिए भी यूरोप की ओर आकर्षित होते हैं। यूरोपीय कार्य संस्कृति व्यक्तिगत और व्यावसायिक जीवन के बीच एक स्वस्थ संतुलन को बढ़ावा देने के लिए प्रसिद्ध है, जो समग्र कैरियर अनुभव चाहने वाले छात्रों के लिए आकर्षण बढ़ाती है। भारतीयों के लिए यूरोपीय शिक्षा में भविष्य के रुझान आगे देखते हुए, भारतीय छात्रों का यूरोपीय विश्वविद्यालयों को चुनने का रुझान जारी रहने की उम्मीद है। अनुकूल नीतियों का संयोजन और उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा की इच्छा संभवतः अधिक छात्रों को यूरोप की ओर ले जाएगी। हालाँकि, यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि हालाँकि यूरोपीय देश अंतर्राष्ट्रीय छात्रों को आकर्षित करने के लिए उत्सुक हैं, लेकिन उनकी अर्थव्यवस्थाएँ इस आमद पर निर्भर नहीं हैं। कुछ अन्य क्षेत्रों के विपरीत, यूरोप में केवल आर्थिक कारणों से अंतरराष्ट्रीय नामांकन में वृद्धि का अनुभव होने की संभावना नहीं है। इसके बजाय, यूरोपीय विश्वविद्यालयों की प्रतिष्ठा और उनके द्वारा प्रदान किए जाने वाले विविध अवसरों के कारण भारतीय छात्रों के बीच यूरोपीय शिक्षा की मांग लगातार बढ़ेगी। फैशन, आईटी या उन्नत इंजीनियरिंग जैसे विशिष्ट उद्योगों में अपनी पहचान बनाने के इच्छुक छात्रों के लिए, यूरोप एक अद्वितीय और मूल्यवान शैक्षिक परिदृश्य प्रस्तुत करता है। जैसे-जैसे अधिक भारतीय छात्र पारंपरिक शैक्षिक स्थलों से परे दिखते हैं, यूरोपीय विश्वविद्यालय विश्व स्तरीय शिक्षा को वैश्विक कैरियर के अवसरों के साथ जोड़ने का लक्ष्य रखने वालों के लिए शीर्ष विकल्प के रूप में उभर रहे हैं। चाहे वह पेरिस में फैशन हो, जर्मनी में औद्योगिक इंजीनियरिंग हो, या यूके में आईटी हो, यूरोप नए क्षितिज तलाशने के लिए तैयार महत्वाकांक्षी भारतीय छात्रों के लिए ढेर सारे अवसर प्रदान करता है।

प्रिंसिपल शैक्षिक स्तंभकार स्ट्रीट कौर चंद एमएचआर मलोट पंजाब

कृत्रिम बुद्धिमत्ता सभी के लिए है: समावेशी नवाचारों का मार्ग : विजय गर्ग

कृत्रिम बुद्धिमत्ता कई उद्योगों के भविष्य को आकार दे रही है। लेकिन इसकी शक्ति को पर्यावरणीय और नैतिक प्रबंधन के साथ संतुलित किया जाना चाहिए आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस अब कोई भविष्यवादी अवधारणा नहीं है। यह यहां है, आज, तेजी से उद्योगों को नया आकार दे रहा है और बदल रहा है, नवाचार को आगे बढ़ा रहा है, विभिन्न क्षेत्रों में जटिल समस्याओं का समाधान कर रहा है। विशाल डेटासेट को संसाधित करने, संचालन को अनुकूलित करने और पूर्वानुमानित अंतर्दृष्टि प्रदान करने की इसकी क्षमता मूल रूप से व्यावसायिक संचालन को बदल रही है। एआई का अनुप्रयोग किसी भी व्यवसाय के लिए क्षमताओं की एक श्रृंखला को शक्ति प्रदान करता है - नियमित कार्यों को स्वचालित करने और निर्णय लेने में सहायता करने से लेकर प्रक्रिया में सुधार लाने और असंरचित डेटा से कार्रवाई योग्य अंतर्दृष्टि निकालने तक। मैकिन्से की रिपोर्ट के अनुसार, जनरल एआई अगले तीन वर्षों में वैश्विक अर्थव्यवस्था में $2.5 ट्रिलियन से $4 ट्रिलियन के बीच मूल्य जोड़ सकता है। लेकिन यह कहना कि एआई केवल उन लोगों के लिए है जो प्रौद्योगिकी को समझते हैं या इसका भरपूर उपयोग करते हैं, एक गंभीर गलत धारणा होगी। इस नए युग में, AI सभी के लिए है - संपूर्ण व्यावसायिक परिदृश्य में दक्षता, नवाचार और विकास को बढ़ावा देने के लिए तैयार है। परिवर्तन का भविष्य एआई का अनुप्रयोग सिर्फ व्यवसाय के दायरे से परे है। भारत में, जहां स्वास्थ्य देखभाल संसाधन अक्सर कम होते हैं, यह न केवल चिकित्सा निदान को आगे बढ़ाकर बल्कि स्केलेबल, जीवन रक्षक समाधान प्रदान करके गंभीर स्वास्थ्य स्थितियों का शीघ्र पता लगाने पर गहरा प्रभाव डाल रहा है। इस बीच, बड़े डेटा-संचालित उद्योग डेटा प्रोसेसिंग, विश्लेषण और विज़ुअलाइज़ेशन को बढ़ाने के लिए एआई का उपयोग कर रहे हैं; वित्तीय संस्थान इसका उपयोग धोखाधड़ी का पता लगाने और जोखिम मूल्यांकन के लिए कर रहे हैं; और विपणक इसका उपयोग ग्राहक सहभागिता और बिक्री पूर्वानुमान को बेहतर बनाने के लिए कर रहे हैं; यह विनिर्माण क्षेत्र के लिए पूर्वानुमानित रखरखाव और दक्षता चला रहा है; और ई-कॉमर्स खिलाड़ी वैयक्तिकृत अनुशंसाओं और बेहतर

इन्वेंट्री प्रबंधन का लाभ उठा रहे हैं। अभूतपूर्व प्रौद्योगिकी तक पहुंच भी अब बड़े निगमों तक सीमित नहीं है। मध्य-बाज़ार उद्यम भी अपने परिचालन का विस्तार करने के लिए प्रौद्योगिकी निवेश को प्राथमिकता दे रहे हैं। हाल के उद्योग अनुसंधान से पता चलता है कि 96% मध्यम आकार के भारतीय संगठन जनरल एआई कार्यान्वयन को प्राथमिकता देते हैं, जो वैश्विक औसत 91% से अधिक है। वास्तव में, भारतीय मध्य-बाज़ार व्यवसायों के लिए, जनरल एआई (66%) को अपनाना 2024 में सबसे मजबूत संगठनात्मक प्राथमिकता के रूप में साइबर सुरक्षा (67%) की तैयारी के बाद दूसरे स्थान पर है। एआई परिनियोजन के लिए यह सक्रिय दृष्टिकोण एआई की क्षमता की बढ़ती मान्यता को दर्शाता है। गोपनीयता, विपणन और बिक्री, सुरक्षा और आपूर्ति श्रृंखला अनुकूलन जैसे प्रमुख क्षेत्रों में क्रांति लाना। जैसे-जैसे एआई स्वयं विकसित हो रहा है, इसकी परिवर्तनकारी शक्ति का और विस्तार होगा, नए अवसर खुलेंगे और दुनिया की कुछ सबसे गंभीर चुनौतियों का समाधान होगा। नैतिक उपयोग एआई तेजी से प्रगति कर रहा है, लेकिन यह प्रगति साइबर सुरक्षा जोखिम और बढ़ती ऊर्जा खपत, पर्यावरण और नैतिकता के बारे में चिंताओं को बढ़ाने जैसी चुनौतियां लाती है। हालांकि यह प्रक्रियाओं को अनुकूलित कर सकता है और उत्सर्जन को कम कर सकता है - परिपत्र अर्थव्यवस्था रणनीतियों की सिफारिश करके और ऊर्जा दक्षता में सुधार करके - यह उच्च कार्बन पदचिह्न के साथ भी आता है, खासकर डेटा केंद्रों में जहां बड़े मॉडल को प्रशिक्षित और तैनात किया गया है। एआई के नैतिक उपयोग को सुनिश्चित करने के लिए सुरक्षित, टिकाऊ, विश्वसनीय और जिम्मेदार प्रथाओं के साथ नवाचार को संतुलित करने की आवश्यकता है जो पर्यावरणीय और सामाजिक प्रभावों को कम करती है। कोवास्तव में एआई की क्षमता को अनलॉक करने के लिए, ऊर्जा-कुशल एआई मॉडल को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। साथ ही, इसके विकास को टिकाऊ और नैतिक प्रथाओं के साथ जोड़ना भी महत्वपूर्ण है। एआई का भविष्य निरंतर नवाचार और सहयोग के प्रति प्रतिबद्धता की मांग करता है, यह सुनिश्चित करते हुए कि इसकी व्यापक तैनाती एक अधिक जिम्मेदार दुनिया में योगदान देती है। एआई की परिवर्तनकारी शक्ति को पर्यावरण और नैतिक प्रबंधन के साथ संतुलित करना न सिर्फ सही रास्ता है, बल्कि आगे बढ़ने का एकमात्र रास्ता है।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल शैक्षिक स्तंभकार स्ट्रीट कौर चंद एमएचआर मलोट पंजाब

राय

जाहि विधि राखे राम

सहज जीवन मार्ग में हमारा जीवन प्रेममय हो जाता है, या यूं कहिए कि हम खुद प्रेममय हो जाते हैं, हम प्रेम की प्रतिमूर्ति बन जाते हैं और इस ब्रह्मांड की हर जड़-चेतन वस्तु से प्रेम करने लगते हैं। अकारण प्रेम करने लगते हैं, बिना किसी लाभ की आशा के प्रेम करने लगते हैं। मनुष्यों से ही नहीं, पशु-पक्षियों से भी, पेड़-पौधों से भी और प्राणहीन मानी जाने वाली वस्तुओं से भी प्रेम करने लगते हैं, पर उनसे अटैच नहीं होते, उनमें मोह नहीं रखते। इसके साथ ही हम हर अवस्था में परमात्मा के प्रति कृतज्ञ होना सीख लेते हैं। हमारी इच्छाएं, आकांक्षाएं और प्रतिस्पद्र्धाएं समाप्त हो जाती हैं और हमारा जीवन 'जाहि विधि राखे राम, ताहि विधि रहिए' का जीता-जागता उदाहरण बन जाता है। हम हर हाल में खुश रहना, खुश रखना और विनम्र होकर कृतज्ञता भाव में रहना सीख लेते हैं। जनसेवा को ध्येय बना लेते हैं'

भारतीय सनातन संस्कृति में रचे-पगे हमारे समाज ने, पंडित जनों ने, अधिकारी विद्वानों ने और संतों-मुनियों, मनीषियों ने ब्रह्मचर्य के गुण की बहुत प्रशंसा की है। यही कारण है कि अक्सर मान लिया जाता है कि संन्यास लेने के लिए ब्रह्मचर्य एक अनिवार्य आवश्यकता है। यही नहीं, यह भी कहा जाता है कि आध्यात्मिक जीवन जीने के लिए भी ब्रह्मचर्य एक अनिवार्य आवश्यकता है। यानी, अगर आप ब्रह्मचारी नहीं हैं तो आप संन्यास नहीं ले सकते और आपका जीवन आध्यात्मिक भी नहीं हो सकता। बुद्ध हों या महावीर, दोनों ने निर्वाण की राह में चलने के लिए ब्रह्मचर्य अपनाया। संसर्ग की तो बात की क्या है, जैन धर्म में दीक्षित संन्यास लेने वाली महिलाएं तो किसी पुरुष को छू भी नहीं सकतीं, यहां तक कि किसी पुरुष और किसी महिला संत द्वारा एक-दूसरे के कपड़ों का छू जाना भी निषिद्ध माना गया है। दरअसल, यह एक मिथ है, एक मिथ्या विश्वास है। व्यक्ति ब्रह्चारी हो, यह एक बहुत अच्छा गुण है, पर संन्यासी होना और ब्रह्मचारी होना, दो अलग-अलग बातें हैं। इनका आपस में कोई संबंध नहीं है, और शादीशुदा जीवन का संन्यास से कोई विरोध भी नहीं है। आध्यात्मिक जीवन जीने के लिए भी ब्रह्चारी होना एक अच्छा गुण तो है, पर यह आवश्यक हो, ऐसा नहीं है। हमारे समाज में एक और भ्रम भी बड़ी गहराई से जुड़ा हुआ है कि संन्यासी होने के लिए घर और परिवार को छोड़ना आवश्यक है।

महात्मा बुद्ध अपनी धर्मपत्नी और छोटे से बच्चे को सोता छोड़ कर निकल गए थे ताकि वो निर्वाण की राह खोज सकें। आज हम जितने संन्यासियों को देखते हैं, अधिकांश ने घर-परिवार छोड़कर संन्यस्त जीवन अपनाया है। घर-परिवार छोड़ने का दूसरा मतलब यह भी है कि आप अपना व्यवसाय या नौकरी भी छोड़ देंगे। उपरोक्त दोनों ही धारणाएं ऐसी हैं जिनका संन्यास से या आध्यात्मिक जीवन से कोई लेना-देना नहीं है। संन्यास लेने के लिए ब्रह्मचर्य कोई आवश्यक शर्त नहीं है। संन्यास लेने के लिए घर, परिवार, समाज, दुनिया या नौकरी और व्यवसाय को छोड़ना कोई आवश्यक शर्त नहीं है। आपने छोड़ दिया, बहुत बढ़िया। आपने नहीं छोड़ा, बहुत बढ़िया। अगर हम अपने इतिहास को देखें तो हमारे सनातनी संत न केवल विवाहित थे, संन्यस्त जीवन में भी वे अपनी धर्मपत्नियों के साथ थे, बल्कि उनके बच्चे भी थे। यानी, वे संत थे, लेकिन ब्रह्मचारी नहीं थे। अधिकांश संत और ऋषि-मुनि गुरुकुल चलाते थे और समाज में शिक्षा का प्रसार करते थे। उन्होंने शिक्षण का अपना काम भी नहीं छोड़ा था। समाज में रहते हुए, घर-परिवार में रहते हुए, दुनिया में रहते हुए, अपना व्यवसाय या नौकरी करते हुए, अपनी जिम्मेदारियां निभाते हुए भी आध्यात्मिक जीवन जिया जा सकता है और संन्यास भी लिया जा सकता है। आइये, अब 'उल्टे बांस बरेली को' भी कर लें। संन्यास लेने के लिए या आध्यात्मिक जीवन जीने के लिए ब्रह्मचर्य भी आवश्यक है और घर, परिवार के साथ-साथ अपनी नौकरी या व्यवसाय को छोड़ना भी आवश्यक है। इसे समझना आवश्यक है। घर-परिवार, नौकरी या व्यवसाय को शारीरिक रूप से छोड़ने की जरूरत नहीं है, पर मन से छोड़ना आवश्यक है।

इसी तरह काम वासना को शरीर से नहीं, बल्कि मन से छोड़ने की आवश्यकता है। काम वासना को मन से छोड़ने का मतलब यह है कि हमेशा काम वासना में ही रत नहीं रहना और अपने जीवनसाथी के अतिरिक्त किसी अन्य से संसर्ग नहीं करना। लेकिन आपस में मिलना-जुलना, बातचीत करना, साथ बैठना, साथ खाना खाना आदि निषिद्ध नहीं है। इसी तरह नौकरी या व्यवसाय को मन से छोड़ना है, उससे आसक्ति नहीं रखनी। पदोन्नति के लिए किसी दूसरे की झूठी शिकायतें नहीं करनी, और व्यवसाय में लाभ के लिए झूठ नहीं बोलना। 'सहज संन्यास मिशन' का सहज जीवन मार्ग हमें जीवन में आध्यात्मिक सफलता के राज सिखाता है। सहज संन्यास मिशन में कोई दान या चढ़ावा स्वीकार नहीं किया जाता, किसी कोर्स की कोई फीस नहीं ली जाती, या साधकों को आध्यात्मिक होना सीखने के लिए कोई पैसा खर्च नहीं करना पड़ता। सहज जीवन मार्ग में हम सहजता से जीना सीखते हैं, सच्चाई से जीना सीखते हैं और ईमानदारी से जीना सीखते हैं। हम खुद के प्रति जिम्मेदार हो जाते हैं, खुद ही खुद के गवाह हो जाते हैं, खुद ही खुद के चरित्र की रखवाली करते हैं, और खुद से झूठ बोलना या खुद को धोखा देना बंद कर देते हैं। यही संन्यास है, यही आध्यात्मिक जीवन है। सहज जीवन मार्ग में हमारा जीवन प्रेममय हो जाता है, या यूं कहिए कि हम खुद प्रेममय हो जाते हैं, हम प्रेम की प्रतिमूर्ति बन जाते हैं और इस ब्रह्मांड की हर जड़-चेतन वस्तु से प्रेम करने लगते हैं। अकारण प्रेम करने लगते हैं, बिना किसी लाभ की आशा के प्रेम करने लगते हैं।

अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा प्राप्त करने वाले 57% छात्र राज्य बोर्डों से हैं

विजय गर्ग

एक हालिया सर्वेक्षण में इस बात पर प्रकाश डाला गया है कि अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा प्राप्त करने वाले लगभग 57% छात्र राज्य बोर्डों से आते हैं, जिसमें 34% महिलाएँ अग्रणी हैं। जापान और नीदरलैंड रोमांचक नए विकल्पों के रूप में उभर रहे हैं, जिससे छात्र विदेश में पारंपरिक अध्ययन स्थलों से परे तेजी से आगे बढ़ रहे हैं। पारंपरिक पसंदीदा कनाडा, यूके और यूएस अंतरराष्ट्रीय छात्रों के लिए शीर्ष विकल्प बने हुए हैं।

आम धारणा के विपरीत अंतरराष्ट्रीय, आईसीएसई और सीबीएसई बोर्ड के छात्रों को विदेश में पढ़ने का अधिक अनुभव और आकांक्षाएं होती हैं। लीप स्कॉलर द्वारा आयोजित 'एप्लिकेशन-आधारित सर्वेक्षण 2024' ने सुझाव दिया कि स्थानीय राज्य बोर्डों के छात्र वैश्विक शिक्षा को आगे बढ़ाने के लिए समान रूप से उत्साहित हैं। यह एक व्यापक और अधिक विविध जनसांख्यिकीय को शामिल करने की ओर इशारा करता है, जिसमें पारंपरिक पृष्ठभूमि और जातीयताओं से परे अंतरराष्ट्रीय अध्ययन की आकांक्षाएं शामिल हैं। इसके अलावा, इस प्रवृत्ति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा (34%) महिलाओं के साथ है, सर्वेक्षण में यह भी बताया गया है कि कैसे भारत में महिलाएं रूढ़िवादिता को तोड़ रही हैं और वैश्विक शिक्षा में आगे बढ़ रही हैं।

इसके अलावा, सर्वेक्षण से गंतव्य प्राथमिकताओं और अध्ययन के क्षेत्रों में बदलाव का पता चला। जबकि कनाडा, यूके और यूएस जैसे शीर्ष गंतव्य सबसे लोकप्रिय विकल्प बने हुए हैं, भारतीय छात्र तेजी से इन देशों से परे देख रहे हैं, जापान और नीदरलैंड रोमांचक नए विकल्प के रूप में उभर रहे हैं। सर्वेक्षण से यह भी पता चलता है कि हालांकि एसटीईएम पाठ्यक्रम लोकप्रिय बने हुए हैं, लेकिन वे अब अंतरराष्ट्रीय छात्रों के लिए एकमात्र आकर्षण नहीं रह गए हैं। इसके बजाय, छात्र मनोविज्ञान, कानून, खेल विज्ञान, वास्तुकला, भवन और योजना, प्रदर्शन कला और सामाजिक विज्ञान सहित कई विषयों की खोज कर रहे हैं, जो अधिक अच्छी तरह से विकसित और विविध शैक्षिक अनुभव की इच्छा

का संकेत देते हैं।

राज्य बोर्ड के छात्रों के बीच आकांक्षाओं में वृद्धि का श्रेय देश में तेजी से डिजिटल प्रवेश, बढ़ती पहुंच और अंतरराष्ट्रीय अध्ययन के अवसरों के बारे में बढ़ती जागरूकता को दिया जा सकता है। इसके अतिरिक्त, ऑनलाइन संसाधनों और शिक्षा प्लेटफार्मों की व्यापक उपलब्धता ने सूचना तक पहुंच को लोकतांत्रिक बना दिया है, जिससे छात्रों को अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा विकल्पों का अधिक आसानी से पता लगाने की अनुमति मिल गई है। "भारतीय छात्र अपने लिए सबसे अच्छा क्या है, इसकी खोज में अधिक महत्वाकांक्षी और दूरदर्शी बन रहे हैं। हम भारतीय छात्रों, विशेष रूप से राज्य बोर्डों के छात्रों की बढ़ती आकांक्षाओं से प्रेरित हैं, जो अब पहले की तरह विदेश में पढ़ाई करने पर विचार कर रहे हैं और उसे अपना रहे हैं। हमें यह देखकर भी खुशी हो रही है कि महिलाएँ इस कार्य का नेतृत्व कर रही हैं। यह बदलाव न केवल विदेश में पढ़ाई की बढ़ती पहुंच को दर्शाता है, बल्कि भारतीय छात्रों की बदलती मानसिकता को भी दर्शाता है, जो अब सीखने के अपरंपरागत तरीकों की खोज के लिए अधिक खुले हैं, "लीप के सह-संस्थापक अर्नव कुमार ने कहा।

सर्वेक्षण के अन्य प्रमुख निष्कर्षों में शामिल हैं:

जापान और नीदरलैंड रोमांचक नए विकल्पों के रूप में उभर रहे हैं, जिससे छात्र विदेश में पारंपरिक अध्ययन स्थलों से परे तेजी से आगे बढ़ रहे हैं। पारंपरिक पसंदीदा कनाडा, यूके और यूएस अंतरराष्ट्रीय छात्रों के लिए शीर्ष विकल्प बने हुए हैं।

जबकि एसटीईएम पाठ्यक्रम अंतरराष्ट्रीय छात्रों के बीच लोकप्रिय बने हुए हैं, सर्वेक्षण से पता चलता है कि विदेश में उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्रों के बीच शीर्ष रुझान वाले विषय क्षेत्रों में मनोविज्ञान, कानून, खेल विज्ञान, वास्तुकला, भवन और योजना, प्रदर्शन कला और सामाजिक विज्ञान शामिल हैं।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल शैक्षिक स्तंभकार स्ट्रीट कौर चंद एमएचआर मलोट पंजाब

ऑनलाइन सीखने के माहौल में छात्रों की थकान को कम करने की रणनीतियाँ

विजय गर्ग

(आभासी कक्षाओं में छात्रों की भलाई बढ़ाने की तकनीकें) मैं ऑनलाइन शिक्षा के उदय ने दुनिया भर में छात्रों के लिए लचीलापन और सुविधा ला दी है, लेकिन इसने नई चुनौतियाँ भी पेश की हैं। कई छात्र कक्षा की पारंपरिक संरचना के बिना कोर्सवर्क और व्यक्तिगत जिम्मेदारियों से जूझते हुए खुद को अभिभूत महसूस करते हैं। नतीजा? खराब हुए। बर्नआउट तब होता है जब छात्र मानसिक और शारीरिक रूप से थका हुआ महसूस करते हैं, अपनी पढ़ाई की निरंतर मांगों को पूरा करने में असमर्थ होते हैं। यदि आप ऑनलाइन सीखने के दबाव से जूझ रहे हैं, तो यहां छह रणनीतियाँ हैं जो आपको ऊर्जावान और केंद्रित रहने में मदद करेंगी। 1. समय प्रबंधन में महारत हासिल करें: अपने दिन की संरचना करें ऑनलाइन सीखने में सबसे बड़ी बाधाओं में से एक निर्धारित कार्यक्रम की कमी है। व्यक्तिगत रूप से कक्षाओं में भाग लेने की दिनचर्या के बिना, छात्रों के लिए विलंब करना आसान होता है, जिससे अंतिम समय में रटना और अत्यधिक दबाव होता है। एक अच्छी समय प्रबंधन प्रणाली आपको नियंत्रण हासिल करने में मदद कर सकती है। एक दैनिक या साप्ताहिक योजना बनाकर शुरुआत करें जिसमें यह बताया जाए कि आप कब कक्षाओं में भाग लेंगे, अध्ययन करेंगे और आराम करेंगे। अपना समय व्यवस्थित करने के लिए डिजिटल योजनाकारों, ऐप्स या यहां तक कि एक भौतिक कैलेंडर का उपयोग करें। इस बारे में यथार्थवादी रहें कि आपको प्रत्येक कार्य के लिए कितना समय चाहिए, और ब्रेक शामिल करना सुनिश्चित करें। एक संरचित शेड्यूल कार्यों को बढ़ने से रोकता है और आपके दिन को प्रबंधनीय रखता है। 2. सीमाएं बनाएं: अध्ययन के समय को व्यक्तिगत समय से अलग करें ऑनलाइन शिक्षण स्कूल और घर के बीच की रेखा को धुंधला कर देता है, जिससे इसे मानसिक रूप से बंद करना मुश्किल हो जाता है। जब आपका रहने का स्थान आपकी कक्षा के बराबर हो जाता है, तो यह महसूस करना आसान हो जाता है कि आप हमेशा ₹चालू₹ हैं और हमेशा काम कर रहे हैं। बर्नआउट को रोकने के लिए, अध्ययन के समय और व्यक्तिगत समय के बीच स्पष्ट सीमाएँ निर्धारित करें। अपने घर में पढ़ाई के लिए एक विशिष्ट क्षेत्र निर्धारित करें, चाहे वह डेस्क हो या शांत कोना। इस तरह, जब आप उस स्थान से दूर चले जाते हैं, तो आपका दिमाग विश्राम मोड में बदल सकता है। बिस्तर पर या सोफे पर जहां आप आराम करते हैं, स्कूल का काम करने से बचें, क्योंकि इससे आपको मानसिक रूप से अपनी पढ़ाई से अलग होने में कठिनाई हो सकती है। 3. नियमित ब्रेक लें: खुद को रिचार्ज करने के लिए समय दें बिना ब्रेक लिए घंटों तक पढ़ाई करने की आदत डालना आसान है, खासकर जब समय सीमा नजदीक आ रही हो। लेकिन बिना रुके काम करने से वास्तव में उत्पादकता कम हो जाती है और थकावट होने लगती है। अपने दिमाग को तेज़ रखने और बर्नआउट को रोकने के लिए नियमित ब्रेक लेना आवश्यक है। पोमोडोरो विधि जैसी तकनीकों का उपयोग करके, जहां आप 25 मिनट तक अध्ययन करते हैं और फिर 5 मिनट का ब्रेक लेते हैं, अपना ध्यान केंद्रित रख सकते हैं। ब्रेक के दौरान, इधर-उधर घूमना, खिंचाव करना या

थोड़ी देर टहलना सुनिश्चित करें। शारीरिक गतिविधि आपके शरीर और दिमाग को तरोताजा करने में मदद करती है, जिससे आप नई ऊर्जा के साथ अपने काम पर लौट सकते हैं। 4. साथियों से जुड़े रहें: खुद को अलग-थलग न करें ऑनलाइन सीखने की चुनौतियों में से एक आपके सहपाठियों के साथ आमने-सामने बातचीत की कमी है। सामाजिक अलगाव से जलन की भावना बढ़ सकती है, क्योंकि छात्र अपनी पढ़ाई में कटा हुआ और असमर्थित महसूस करते हैं। ऑनलाइन अध्ययन समूहों, चर्चा मंचों या आकस्मिक वीडियो चैट के माध्यम से अपने साथियों से जुड़े रहने का प्रयास करें। दूसरों के साथ सहयोग करने से न केवल आपको सामग्री से जुड़े रहने में मदद मिलती है बल्कि समुदाय की भावना भी मिलती है। यह जानना कि अन्य लोग भी समान चुनौतियों का सामना कर रहे हैं, आश्वस्त हो सकता है और आपको आगे बढ़ने के लिए प्रेरित कर सकता है। 5. यथार्थवादी लक्ष्य निर्धारित करें: अपने आप पर बहुत अधिक बोझ न डालें महत्वाकांक्षी होना महत्वपूर्ण है, लेकिन अवास्तविक लक्ष्य निर्धारित करना इसमें बाधा डाल सकता हैअनावश्यक दबाव और जलन की ओर ले जाता है। बड़ी परियोजनाओं को छोटे-छोटे कार्यों में विभाजित करें और दैनिक या साप्ताहिक लक्ष्य निर्धारित करें जो प्राप्त करने योग्य हों। यह दृष्टिकोण आपको केंद्रित रहने में मदद करता है और आपकी प्रगति को ट्रैक करना आसान बनाता है। सब कुछ एक साथ पूरा करने का लक्ष्य रखने के बजाय, एक समय में एक ही कार्य पूरा करने पर ध्यान केंद्रित करें। इससे न केवल तनाव कम होता है बल्कि जब आप अपनी सूची से प्रत्येक आइटम पर सही का निशान लगाते हैं तो आपको उपलब्धि का एहसास भी होता है। रास्ते में छोटी-छोटी जीतों का जश्न मनाएं और आपने जो प्रगति की है उसका श्रेय खुद को दें। 6. मदद मांगें: चुपचाप कष्ट न सहें कई छात्रों को लगता है कि उन्हें सबकुछ खुद ही संभालना होगा, लेकिन यह बिल्कुल सच नहीं है। यदि आप कुछ विषयों पर अभिभूत या अनिश्चित महसूस कर रहे हैं, तो मदद मांगने में संकोच न करें। चाहे वह शिक्षक, शिक्षक या परामर्शदाता से बात करना हो, मार्गदर्शन मांगना राहत प्रदान कर सकता है और आपको पटरी पर वापस आने में मदद कर सकता है। आपके प्रशिक्षक और सहायक कर्मचारी मदद के लिए मौजूद हैं, इसलिए उन संसाधनों का अधिकतम लाभ उठाएँ। कभी-कभी, किसी से अपने कार्यभार या चिंताओं के बारे में बात करने से आपका मन शांत हो सकता है और आपको ऐसे समाधान ढूंढने में मदद मिल सकती है जिन पर आपने विचार नहीं किया था। निष्कर्ष बर्नआउट को आपके ऑनलाइन सीखने के अनुभव का हिस्सा होना जरूरी नहीं है। इन रणनीतियों को लागू करके, आप अपनी पढ़ाई के लिए एक संतुलित दृष्टिकोण बना सकते हैं जो अकादमिक सफलता और व्यक्तिगत कल्याण दोनों को प्राथमिकता देता है।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल शैक्षिक स्तंभकार स्ट्रीट कौर चंद एमएचआर मलोट पंजाब

रिलायंस के शेयरों में गिरावट क्यों, बोनस शेयर इश्यू के बाद बढ़ेंगे मुकेश अंबानी की कंपनी के भाव?

परिवहन विशेष न्यूज

पिछले कुछ दिनों से रिलायंस इंडस्ट्रीज के शेयरों में गिरावट देखी जा रही है। सिर्फ तीन में रिलायंस के शेयरों में 7 फीसदी से अधिक की गिरावट आ गई है। इसका नकारात्मक असर पूरे भारतीय शेयर बाजार पर दिख रहा है। आइए जानते हैं कि अरबपति कारोबारी मुकेश अंबानी की रिलायंस इंडस्ट्रीज में गिरावट क्यों आ रही है और कब तक इसमें तेजी आने के आसार हैं।

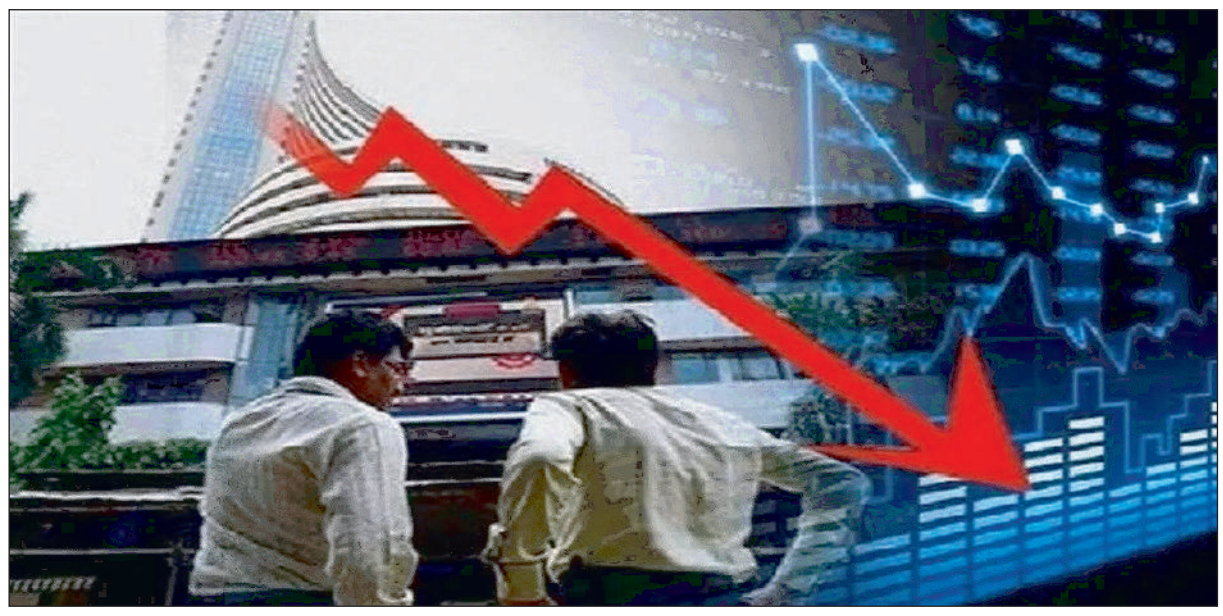

नई दिल्ली। पिछले तीन दिनों से भारतीय शेयर मार्केट में गिरावट का सिलसिला जारी है। इसकी चपेट में आने से हेवीवेट लार्ज कैप स्टॉक भी नहीं बच सके। अरबपति कारोबारी मुकेश अंबानी की रिलायंस इंडस्ट्रीज के स्टॉक में भी पिछले तीन दिनों के दौरान तकरीबन 7.6 फीसदी की गिरावट आई है। गुरुवार को यह 3.95 फीसदी की गिरावट के साथ 2,813.95 रुपये पर बंद हुआ। यह अपने ऑल-टाइम हाई से 12 फीसदी से अधिक नीचे आ गया है।

रिलायंस के शेयरों में गिरावट क्यों

रिलायंस इंडस्ट्रीज के कारोबार का बड़ा हिस्सा ऑयल टु केमिकल्स (O2C) का है। फिलहाल, मध्य पूर्व में भू-राजनीतिक तनाव के चलते तेल की कीमतों में भारी उतार-चढ़ाव देखा जा रहा है। इसका असर रिलायंस के शेयरों पर भी पड़ रहा है।

जून तिमाही तक रिलायंस में विदेशी निवेशकों की हिस्सेदारी 21.75 फीसदी थी। अब विदेशी निवेशक चीन जैसे बाजारों को रुख करने के लिए भारत में बिकवाली कर रहे हैं। इसकी चोट रिलायंस जैसे शेयरों पर भी पड़ रही है।

रिलायंस में कब आ सकती है तेजी

यह भी काफी दिलचस्प बात है कि पिछले साल नवरात्रि के दौरान भी रिलायंस कमोबेश कुछ इसी तरह के हालात से गुजर रहा था। इस नवरात्रि में रिलायंस का शेयर अपने दीर्घकालिक 200-डीएमए (डेली मूविंग एवरेज) से नीचे गिर गया है। यह नवरात्रि 2023 के आसपास भी 200-डीएमए से नीचे आया था।

लेकिन, RIL के शेयर ने 200-डीएमए से नीचे मुश्किल से चार कारोबारी सत्र बिताए, और जल्द ही 30 अक्टूबर, 2023 को वापस ऊपर चढ़ गया। इसके बाद शेयर में 35.3 फीसदी की मजबूत रैली दिखी और इसने 8 जुलाई, 2024 को 3,218 रुपये नया ऑल टाइम हाई बनाया। रिलायंस के निवेशक फिर से वैसे ही प्रदर्शन की उम्मीद कर रहे होंगे।

रिलायंस पर क्या है ब्रोकरेज की राय

विदेशी और घरेलू दोनों ही ब्रोकरेज फर्मों का रिलायंस इंडस्ट्रीज पर काफी पॉजिटिव रुख है। सीएलएसए ने आरआईएल पर 3,300 रुपये के टारगेट प्राइस के साथ 'आउटपरफॉर्म' रेटिंग बनाए रखी है। वहीं, नोमुरा ने भी 3,600 रुपये के टारगेट प्राइस के साथ 'Buy' रेटिंग दी है; बर्नस्टीन ने RIL का लक्ष्य मूल्य बढ़ाकर 3,440 रुपये प्रति शेयर कर दिया है।

मार्च 2024 में गोल्डमैन सैक्स ने कहा कि बुल रन की स्थिति में मुकेश अंबानी की कंपनी के लिए 4,495 रुपये का टारगेट प्राइस दिया था। घरेलू ब्रोकरेज फर्म मोतीलाल ओसवाल ने भी रिलायंस को 3,435 रुपये प्रति शेयर के टारगेट प्राइस के साथ खरीदने की सलाह दी है।

RIL निवेशकों की वक्त से पहले दिवाली

रिलायंस के बोर्ड ने 5 सितंबर को 1:1 अनुपात में इक्विटी शेयरों के बोनस इश्यू को मंजूरी दी थी। इसका मतलब है कि रिकॉर्ड तिथि तक 1 इक्विटी शेयर रखने वाले प्रत्येक शेयरधारक को 1 शेयर मुफ्त दिया जाएगा।यह पिछले सात साल में रिलायंस का पहला और कुल मिलाकर अब तक का छठा बोनस शेयर इश्यू होगा।

नवरात्र के पहले दिन ही चढ़ गए सोने-चांदी के दाम, 10 ग्राम सोने की क्या है कीमत

फेस्टिव सीजन से पहले ही सोने-चांदी जैसे कीमती धातुओं में तेजी आने के संकेत मिलते हैं। आज से नवरात्र शुरू हो गया है। नवरात्र के पहले दिन ही सोने-चांदी की कीमतों में तेजी आ गई है। आज दोनों धातु अपने ऑल-टाइम हाई पर पहुंच गए हैं। भारत में अक्सर त्योहार के समय सोना-चांदी खरीदना शुभ माना जाता है।

नई दिल्ली। आज से नवरात्र का त्योहार शुरू हो गया है। इसी के साथ फेस्टिव सीजन का भी आगाज हो गया है। नवरात्र के पहले दिन ही सोने-चांदी के दाम में तेजी देखने को मिली है। त्योहार के सीजन में डिमांड बढ़ जाने की वजह से कीमती धातु की कीमतों में तेजी आती है।

आज क्या है सोने-चांदी की कीमत

ऑल इंडिया सराफा एसोसिएशन के अनुसार सोना 200 रुपये बढ़कर 78,300 रुपये प्रति 10 ग्राम पहुंच गया है। यह अभी तक का ऑल-टाइम हाई पर है। इस हफ्ते मंगलवार को गोल्ड 78,100 रुपये प्रति 10 ग्राम पर बंद हुआ था। वहीं, 99.5 फीसदी शुद्ध सोने की कीमत भी 200 रुपये चढ़कर 77,900 रुपये प्रति 10 ग्राम हो गई है।

चांदी भी 665 रुपये उछलकर 93,165 रुपये प्रति किलोग्राम पर पहुंच गई। मंगलवार को एक किलो चांदी की कीमत 92,500 रुपये प्रति किलोग्राम थी।

क्यों आ रही है तेजी

ट्रेडर्स ने कहा कि 'नवरात्रि' की शुरुआत में सोने-चांदी की मांग बढ़ने के कारण कीमती धातुओं के दाम में तेजी आई है। दरअसल, हिंदू पौराणिक कथाओं में नवरात्री में नई चीजों विशेष रूप से कीमती धातुओं की खरीदना शुभ माना जाता है।

पीक फेस्टिवल सीजन के बीच आभूषणों की मांग में वृद्धि और भारतीय रुपये और शेयर बाजार में गिरावट के कारण कमोडिटी में तेजी आई है।

MCX पर क्या है सोने का भाव

वायदा कारोबार में मल्टी कमोडिटी एक्सचेंज (एमसीएक्स) पर दिसंबर डिलीवरी वाला सोना 440 रुपये या 0.58 प्रतिशत की गिरावट के साथ 75,950 रुपये प्रति 10 ग्राम पर आ गया। हालांकि, एमसीएक्स पर चांदी 225 रुपये या 0.25 फीसदी चढ़कर 91,600 रुपये प्रति किलोग्राम पर पहुंच गई।

गुरुवार को सर्राफा बाजार का मूड खराब रहा। बुधवार को अमेरिकी शेयर लाल निशान में कारोबार कर रहे थे। वहीं, इजराइल ईरान के हमलों की वजह से कीमती धातु की कीमतों में भी तेजी आई है। इसके अलावा निवेशक गुरुवार को जारी होने वाले बेरोजगार दावों सहित अमेरिकी नौकरियों के आंकड़ों पर नज़र रखेंगे। यह आंकड़ों का असर सोने की दरों पर पड़ सकता है।

एशियाई कारोबारी घंटों में कॉमेक्स सोना 0.17 प्रतिशत गिरकर 2,665.20 अमेरिकी डॉलर प्रति औंस पर कारोबार कर रहा है। वैश्विक स्तर पर चांदी 0.36 प्रतिशत गिरकर 31.81 डॉलर प्रति औंस पर है।

दशहरा पर युवाओं को सरकार की सौगात, साल भर में मिलेंगे 66,000 रुपये

परिवहन विशेष न्यूज

केंद्रीय वित्त निर्मला सीतारमण ने बजट 2024 में युवाओं के हुनर को तराशने के लिए इंटर्नशिप प्रोग्राम का एलान किया था। इस स्कीम के तहत टाप 500 कंपनियों में अगले पांच साल में एक करोड़ युवाओं को कुशल करने का लक्ष्य रखा गया है। कंपनी मामले के मंत्रालय ने गुरुवार को इस स्कीम का पायलट प्रोजेक्ट शुरू किया।

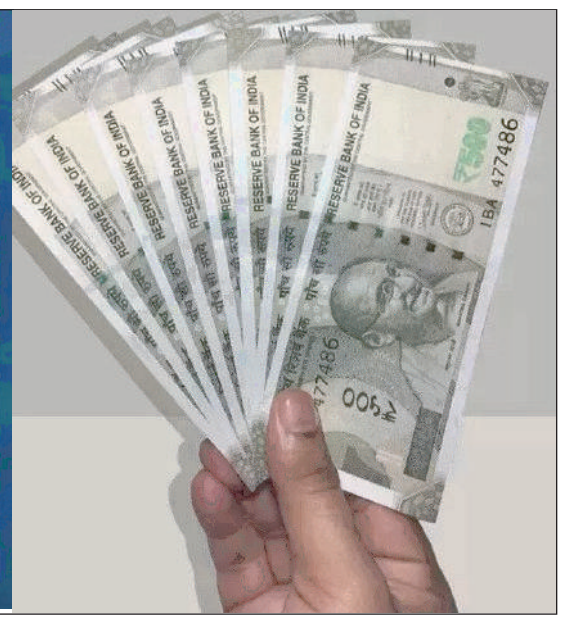

नई दिल्ली। पढ़े-लिखे आर्थिक रूप से कमजोर युवा-युवतियों के लिए सरकार दशहरे पर सौगात लेकर आई है। गुरुवार को प्रधानमंत्री इंटर्नशिप स्कीम की शुरुआत की गई। इस स्कीम में आवेदन के लिए सिर्फ वही युवा-युवती योग्य पात्र होंगे, जिनके परिवार की आय सालाना आठ लाख रुपए से कम है।

केंद्र सरकार का आरक्षण नियम भी इस स्कीम में लागू होगा। यानी अनुसूचित जाति, जनजाति और ओबीसी को आरक्षण मिलेगा लेकिन सिर्फ वही योग्य होंगे जो आर्थिक रूप से कमजोर होंगे।

क्या है प्रधानमंत्री इंटर्नशिप स्कीम

इंटर्नशिप स्कीम की घोषणा इस साल बजट में की गई थी जिसके तहत टाप 500 कंपनियों में अगले पांच साल में एक करोड़ युवाओं को कुशल करने का लक्ष्य रखा गया है। कंपनी मामले के मंत्रालय ने गुरुवार को इस स्कीम का पायलट प्रोजेक्ट शुरू किया।

इसके तहत चालू वित्त वर्ष 2024-25 में 1.25 लाख युवाओं को रोजगार के लायक बनाने के लिए प्रशिक्षण व कुशलता हासिल करने का अवसर प्रदान किया जाएगा। प्रशिक्षण और कौशल विकास की अवधि 12 महीने की होगी और इस अवधि में उन्हें 5000 रुपए की आर्थिक मदद भी दी जाएगी।

4500 रुपए प्रतिमाह केंद्र सरकार देगी और कंपनी 500 रुपए उन्हें अपने सामाजिक दायित्व फंड से देगी। इसके अलावा कंपनी मामले मंत्रालय की तरफ से 6000 रुपए की एकमुश्त राशि भी सभी चयनित उम्मीदवारों को दी जाएगी।

यानी कि प्रशिक्षण हासिल करने वाले उम्मीदवारों को एक साल में 66 हजार रुपए की वित्तीय सहायता मिलेगी। सभी राशि सीधे तौर पर उम्मीदवारों के खाते में दिए जाएंगे। इस इंटर्नशिप स्कीम से चालू वित्त वर्ष में केंद्र सरकार पर 800 करोड़ रुपए का वित्तीय भार आएगा।

वित्त एवं कंपनी मामले की मंत्री निर्मला सीतारमण ने बताया कि यह पूरी तरह से इंटर्नशिप कार्यक्रम है। कोशिश यह होगी कि चयनित उम्मीदवारों को उनके अपने जिले या आसपास के जिले में ही प्रशिक्षण का मौका दिया जाए। इस पूरे कार्यक्रम को चलाने के लिए कंपनी मामले के मंत्रालय ने एक पोर्टल बनाया है और pminternship.mca.gov.in पर जाकर हर कोई उस पोर्टल तक पहुंच सकता है।

कैसे करेंगे आवेदन

सीतारमण ने बताया कि तीन अक्टूबर से यह पोर्टल कंपनियों के लिए खोल दिया गया है। आगामी 10 अक्टूबर तक कारपोरेट कंपनियां पोर्टल पर प्रशिक्षण कार्यक्रम के लिए अपनी पेशकश करेंगी। 12 अक्टूबर यानी कि दशहरे वाले दिन से लेकर 25 अक्टूबर तक इच्छुक योग्य उम्मीदवार प्रशिक्षण हासिल करने के लिए आवेदन कर सकेंगे।

26 अक्टूबर को कंपनी मामले का विभाग पात्र उम्मीदवारों की सूची जारी करेगा जिसे कंपनियों के पास भेजा जाएगा। 27 अक्टूबर से सात नवंबर तक कंपनियां अपनी जरूरत के मुताबिक उम्मीदवारों का चयन करेंगी और उम्मीदवारों को इसकी सूचना दी जाएगी। 8-15 नवंबर के बीच उम्मीदवार कंपनियों की पेशकश को स्वीकार सकेंगे और आगामी दो दिसंबर से उनका इंटर्नशिप कार्यक्रम शुरू हो जाएगा।

कंपनी मामले के राज्य मंत्री हर्ष मल्होत्रा ने बताया कि 111 कॉरपोरेट कंपनियां अब तक अपने यहां इंटर्नशिप कार्यक्रम के लिए तैयार हो गई है। इनमें महिंद्रा एंड महिंद्रा और मैक्स लाइफ जैसी कंपनियां भी शामिल हैं। ज्यादा कंपनियां कृषि व इससे संबंधित सेक्टर के साथ ऑटोमोबाइल्स और फार्मा सेक्टर से जुड़ी हैं।

इंटर्नशिप स्कीम की पात्रता

दसवीं या बारहवीं पास आईटीआई सर्टिफिकेट धारक, पॉलिटेक्निक संस्था से डिप्लोमाधारी, या बीए, बीएससी, बी.काम, बीसीए, बीबीए, बी. फार्मा के डिग्रीधारक इस इंटर्नशिप स्कीम में हिस्सा ले सकते हैं।

वहीं, आईआईटी, आईआईएम, नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी, आईआईएसईआर और ट्रिपल आईआईटी, सीए, सीएस, बीडीएस, एमबीबीएस की डिग्री रखने वाले या फिर पहले से किसी सरकारी इंटर्नशिप कार्यक्रम में हिस्सा ले रहे छात्र पीएम इंटर्नशिप कार्यक्रम के लिए पात्र नहीं होंगे।

अगर माता-पिता में से कोई भी सरकार में स्थायी या नियमित कर्मचारी हैं तो वैसे बच्चे भी इस कार्यक्रम में हिस्सा नहीं ले सकेंगे।

फल, सब्जी या डेयरी प्रोडक्ट्स के दाम बढ़ने पर किसानों को कितना मिलता है फायदा?

परिवहन विशेष न्यूज

रिजर्व बैंक (आरबीआई) ने एक दिलचस्प रिपोर्ट पेश की है। इसमें बताया गया है कि किसी कृषि उत्पाद को बेचने पर किसान को कितना हिस्सा मिलता है। रिपोर्ट के मुताबिक एक आम ग्राहक अगर एक किलो आलू के लिए 100 रुपये का भुगतान किया है तो इसमें से 36.7 रुपये किसान को 16.2 रुपये ट्रेडर्स को 16 रुपये थोक विक्रेता को और 31 रुपये खुदरा दुकानदार को मिलता है।

नई दिल्ली। बाजार में टमाटर की खुदरा कीमत 70-90 रुपये प्रति किलो है लेकिन इसकी पैदावार करने वाले किसान को इसका अधिकतम 33 फीसद ही मिलता है। इसी तरह से आलू की खुदरा कीमत में 37 फीसद, प्याज की खुदरा कीमत का 36 फीसद ही किसानों को मिलता है। यह बात आरबीआई की तरफ से गुरुवार को जारी एक अध्ययन पत्र में कही गई है।

अब जबकि खाद्य उत्पादों की महंगाई से आरबीआई का महंगाई प्रबंधन कई बार असफल हो जाता है तब उसने 12 प्रमुख खाद्य उत्पादों की खुदरा कीमतों और इससे जुड़े सभी आयामों पर चार अध्ययन रिपोर्टें प्रकाशित की है। यह बताती है कि टमाटर, आलू, प्याज, केला, आम, अंगूर, चना, तूर, मूंग, दूध, पौल्ट्री उत्पाद व अंडे की खुदरा कीमतें जब बढ़ती हैं तो किसानों को उस हिसाब से बहुत फायदा नहीं होता।

ये रिपोर्टें यह भी बताती हैं कि आम खाद्य उत्पादों के मुकाबले अगले दलहन व पौल्ट्री या दूध से जुड़े किसानों की खुदरा कीमतों में हिस्सेदारी ज्यादा होती है। मसलन, दूध की खुदरा कीमत में किसानों की हिस्सेदारी 70 फीसदी, पौल्ट्री उत्पादों में 56 फीसद और अंडा में 75 फीसद तक होती है।

इसी तरह से चना की खुदरा कीमत में किसानों को 75 फीसद, मूंग में 70 फीसद और तुर में 65 फीसद हिस्सा किसानों को होता है। यानी दूसरे शब्दों में कहें तो प्रोटीन आधारित उत्पादों में जब भी कीमतें बढ़ेंगी तो किसानों को उसी हिसाब से ज्यादा फायदा होगा।

इसी तरह से केला की खुदरा कीमत का 31 फीसद, अंगूर का 35 फीसद और आम की कीमतों का 45 फीसद किसानों को मिलता है। हाल के वर्षों में यह देखा जा रहा है कि खाद्य उत्पादों की महंगाई की वजह से समूचे महंगाई के हिसाब-किताब में गड़बड़ी हो जाती है। यही वजह है कि आरबीआई ने खाद्य महंगाई पर ज्यादा तवज्जो देना शुरू किया है।

हालांकि खाद्य उत्पादों की महंगाई को थामने में आरबीआई की भूमिका बहुत ही सीमित होती है। रिपोर्ट में आलू की कीमतों की स्थिति को देखें तो यह बात सामने आती है कि एक आम ग्राहक अगर एक किलो आलू के लिए 100 रुपये का भुगतान किया है तो इसमें से 36.7 रुपये किसान को मिला है, 16.2 रुपये ट्रेडर्स को मिला, 16 रुपये थोक विक्रेता को मिलता है और 31 रुपये खुदरा दुकानदार को मिलता है।

प्याज को लेकर कमोबेश यही स्थिति है। यहां किसानों को 36.2 फीसद, ट्रेडर्स को 17.6 फीसद, थोक विक्रेता को 15 फीसद और रिटलर्स को 31.3 फीसद मिलता है। किसानों को ढुलाई आदि का खर्च भी वहन करना पड़ता है। रिपोर्ट में टमाटर, प्याज व आलू (टॉप) की कीमतों में स्थिरता बनाये रखने के लिए देश में ज्यादा से ज्यादा किसान उत्पादक संगठन (एफपीओ) स्थापित करने, कृषि उत्पादों की मार्के¨टग में सुधार करने, फ्यूचर ट्रेडिंग शुरू करने का सुझाव दिया गया है।

नोएडा में सातवें आसमान पर रियल एस्टेट मार्केट, 69 फीसदी उछला अंडर-कंस्ट्रक्शन प्रॉपर्टी का भाव

परिवहन विशेष न्यूज

नोएडा का रियल एस्टेट मार्केट काफी तेजी से बढ़ रहा है। इसकी सबसे बड़ी वजह डिमांड में तेज उछाल है। साथ ही अंडर-कंस्ट्रक्शन प्रोजेक्ट में भी घर खरीदार काफी दिलचस्पी दिखा रहे हैं। नोएडा में निर्माणाधीन अचल संपत्ति का भाव सालाना आधार पर 69 फीसदी तक बढ़ गया है। आइए जानते हैं कि नोएडा खरीदारों को इतना ज्यादा क्यों लुभा रहा है।

नई दिल्ली। नोएडा में प्रॉपर्टी के भाव में तूफानी तेजी देखने को मिल रही है। इसकी वजह डिमांड में बेहताशा इजाफा है। नोएडा में प्रॉपर्टी की डिमांड या फिर सर्च में सालाना आधार पर 15.72 फीसदी की बढ़ोतरी हुई है। मैजिकब्रिक्स की हालिया प्रॉपइंडेक्स रिपोर्ट बताती है कि इस दौरान सप्लाई में सालाना आधार पर 13.1 फीसदी का इजाफा हुआ है।

नोएडा में मकान मालिकों ने डिमांड बढ़ने की वजह से आवासीय मकानों के दाम में 46.2 फीसदी की भारी वृद्धि की है। इस एनसीआर शहर में औसत आवासीय दर 11,625 रुपये प्रति वर्ग फुट (PSF) है।

नोएडा में क्या चल रहा प्रॉपर्टी का रेट?

मैजिकब्रिक्स ने आगे बताया कि बिल्डर फ्लोर की औसत कीमत 3,800 रुपये प्रति वर्ग फुट, मल्टीस्टोरी अपार्टमेंट के लिए 10,100 रुपये प्रति वर्ग फुट, आवासीय घरों के लिए 17,000 रुपये प्रति वर्ग फुट और शानदार विला के लिए 18,900 रुपये प्रति वर्ग फुट है।

मैजिकब्रिक्स की रिपोर्ट यह भी बताती है कि नोएडा 7X (FNG के पास), नोएडा एक्सप्रेसवे साउथ (परी चौक की ओर) और दादरी मेन रोड जैसे इलाकों में घर खरीदार अधिक दिलचस्पी दिखा रहे हैं। ये सबसे अधिक खोजे जाने वाले क्षेत्र हैं। इन क्षेत्रों में औसत आवासीय दर 11,700 रुपये प्रति वर्ग फुट से लेकर 15,300 रुपये प्रति वर्ग फुट तक है।

अंडर-कंस्ट्रक्शन प्रॉपर्टी का रेट भी हाई

अंडर-कंस्ट्रक्शन प्रॉपर्टी में भी घर खरीदार काफी दिलचस्पी दिखा रहे हैं। इससे कीमतों में सालाना आधार पर 69 फीसदी का भारी उछाल आया है। इसका दाम वित्त वर्ष 2023 की जुलाई-सितंबर तिमाही में 7,547 रुपये प्रति वर्ग फुट था। यह वित्त वर्ष 2024 की समान तिमाही में बढ़कर 12,758 रुपये प्रति वर्ग फुट हो गया है।

मैजिकब्रिक्स पोर्टल के अनुसार, ग्राहक 3-बेडरूम अपार्टमेंट को ज्यादा तवज्जो दे रहे हैं। इस सेगमेंट की हिस्सेदारी कुल मांग में 64 फीसदी है। इसकी औसत कीमत 11,300 रुपये प्रति वर्ग फुट है। इसके बाद 22 फीसदी संभावित खरीदार 2 BHK यूनिट को सर्च कर रहे हैं। इसकी औसत कीमत की बात करें, तो यह 8,400 रुपये प्रति वर्ग फुट है।

घर खरीदारों को इतना क्यों लुभा रहा नोएडा?

नोएडा (न्यू ओखला औद्योगिक विकास प्राधिकरण) उत्तर प्रदेश की एक नियोजित शहर (Planned City) है। यह भारत के नेशनल कैपिटल रीजन (एनसीआर) का हिस्सा है और दिल्ली से सटा हुआ है। राष्ट्रीय राजधानी से निकटता ही नोएडा को आवासीय और वाणिज्यिक अचल संपत्ति के लिए एक लोकप्रिय विकल्प बनाता है।

नोएडा की पहचान अपने सुविकसित बुनियादी ढांचे के लिए भी है। यह आईटी, प्रौद्योगिकी पार्कों, शैक्षणिक संस्थानों और मनोरंजन सुविधाओं का केंद्र है। पिछले कुछ वर्षों में नोएडा में तेजी से शहरीकरण और औद्योगिक विकास हुआ है। साथ ही, तेजी से बढ़ता रियल एस्टेट मार्केट भी है, जो घर खरीदने वालों और निवेशकों, दोनों को ही लुभाता है।

राष्ट्र निर्माण में हमारा उत्तरदायित्व: सड़क सुरक्षा और अनुशासन का महत्व

-डॉ. लॉजिस्टिक्स

राष्ट्र हमें सड़क दे सकता है, परंतु उस सड़क पर कैसे चलना है, यह हमारा दायित्व है। यह हमारी बुद्धि, संस्कार और अनुशासन का परिचय देता है। हमें यह समझना होगा कि सड़क पर चलने के नियमों का पालन न केवल हमारी सुरक्षा के लिए बल्कि दूसरों की सुरक्षा के लिए भी अनिवार्य है। लापरवाहीपूर्ण व्यवहार, जैसे तेज गति से वाहन चलाना, यातायात नियमों की अनदेखी करना, या मोबाइल फोन का इस्तेमाल करना, न केवल हमारी जान को खतरे में डालता है बल्कि दूसरों के लिए भी सिरदर्द बन जाता है।

हमारा कर्तव्य है कि हम सड़क पर अनुशासित तरीके से चलें और अपने साथ-साथ दूसरों की सुरक्षा को भी प्राथमिकता दें। सड़क सुरक्षा केवल नियमों का पालन करने से नहीं, बल्कि अपनी सोच और संस्कारों में बदलाव लाने से आती है। हर नागरिक का यह दायित्व है कि वह सड़क पर अपनी जिम्मेदारी समझे और सुरक्षित तरीके से यात्रा करे।

कठोर प्रवर्तन की आवश्यकता

सड़क सुरक्षा को बनाए रखने के लिए केवल व्यक्तिगत जिम्मेदारी ही पर्याप्त नहीं है। इसके लिए नोडल एजेंसियों द्वारा कड़े प्रवर्तन की भी आवश्यकता है। सड़क सुरक्षा नियमों का कड़ाई से पालन सुनिश्चित करना ज़रूरी है ताकि अनुशासन से कोई समझौता न हो। पुलिस और यातायात विभाग को ऐसे नियम लागू करने चाहिए जो न केवल दंडात्मक हों, बल्कि जागरूकता और सही व्यवहार को प्रोत्साहित करें।

सड़क सुरक्षा का सवाल केवल व्यक्तिगत स्वतंत्रता का नहीं, बल्कि सामूहिक उत्तरदायित्व का है। यदि हर व्यक्ति अनुशासन का पालन करे और जिम्मेदारी से सड़क पर चले, तो न केवल दुर्घटनाओं में कमी आएगी, बल्कि राष्ट्र निर्माण की दिशा में एक बड़ा कदम होगा।

इसलिए, हमें अपने संस्कार और बुद्धि का प्रयोग करके सड़क सुरक्षा को बढ़ावा देना चाहिए, न कि अपनी और दूसरों की जान को जोखिम में डालकर लापरवाह व्यवहार करना। अनुशासन और कठोर प्रवर्तन, दोनों का संतुलन हमें एक सुरक्षित और समृद्ध राष्ट्र की दिशा में आगे ले जा सकता है।

डॉ. अंकुर शरण, लॉजिस्टिक्स विशेषज्ञ
drlogistics.ankur@gmail.com

हर मां, बहन और बेटियों के आदर और सम्मान का संदेश भी देता हैं पवित्र नवरात्रि पर्व : फिल्म निर्माता अतुल निमेष

आग्रह – पवित्र नवरात्रि पर नारीशक्ति के आदर सम्मान का संकल्प लें : फ़िल्मि निर्माता अतुल निमेष सभी देशबासियों को शरदीय नवरात्रि की बधाई व शुभकामनाए

मुम्बई,संजय साग़र सिंह। सनातन धर्म में शारदीय नवरात्र के नौ दिनों की अवधि बहुत ही पावन-पवित्र मानी गई है। यह पर्व नारी शक्ति का प्रतीक हैं, शारदीय नवरात्रि का पर्व 3 अक्तूबर से आरम्भ हो गया हैं, जिसका समापन 11 अक्तूबर को नवमी के दिन कन्या पूजन होगा ताकि साधक और उसके परिवार पर माताराणी की कृपा बनी रहे और 12 अक्तूबर को विजयदशमी का पर्व मनाया जाएगा।

शारदीय नवरात्र के शुभ अवसर पर समाजसेवी एवं युवा फ़िल्मि निर्माता अतुल निमेष ने सुख, शांति और समृद्धि एवम् विश्व कल्याण की कामना करते हुए नारी शक्ति के आदर सम्मान का संकल्प लिया और कहा, इस पावन शारदीय नवरात्र के शुभ अवसर पर हम मां जगत जननी से देश-प्रदेश की सुख, समृद्धि व जीवमात्र के कल्याण की कामना करते है। महाशक्ति की कृपा से विश्व में सद्भावना का संचार हो और माँ का आशीर्वाद सम्पूर्ण जगत पर बनी रहे। शक्ति स्वरूपा माता जगदंबा की अनुकंपा से सभी का जीवन सुख, शांति एवं आरोग्यता से परिपूर्ण हो यही हमारी प्रार्थना है। सभी देशबासियों को शारदीय नवरात्रि की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं, माताराणी आप सभी की मनोकामना पूर्ण करें।

श्री निमेष ने कहा, नवरात्रि का पर्व नारी शक्ति का प्रतीक है। नवरात्र पर घर-घर में मां दुर्गा की पूजा होती है, वहां सुख, शांति और समृद्धि बनी रहती है। पवित्र नवरात्रि केवल कन्या पूजन तक सीमित नहीं है। हर मां, बहन, और बेटी का आदर सम्मान का महत्वपूर्ण संदेश भी देते हैं। इसलिए महिलाओं के सम्मान के लिए अच्छा आचरण अपनाएं और कन्या पूजन के साथ ही हर महिला का सम्मान करें तथा हमेशा महिलाओं के प्रति आदर और सम्मान का भाव बनाए रखें। इसके लिए हमें अपने बच्चों को अच्छे संस्कार देने होंगे ताकि वे दूसरी महिलाओं को भी अपने परिवार का सदस्य ही समझे और सब के साथ अच्छा व्यवहार करें। तो आइएं इस नवरात्रि, महिलाओं के सम्मान का संकल्प लें और अपने व्यवहार में बदलाव लाएं, ताकि हर महिला चाहे वह मां हो, पत्नी हो, बहन हो, बेटी हो या कोई स्त्री हो वो आप के व्यवहार से सुरक्षित और सम्मानित महसूस कर सके। सभी महिलाओं का सम्मान करने के लिए आपको कुछ खास करने की जरूरत नहीं है। इसके लिए आज से ही अपने घर से ही शुरुआत करें और आप अपनी मां के साथ समय बिताएंगे। उनका स्वास्थ्य और जरूरतों का ख्याल रखें। रोज़ कुछ समय अपनी मां के साथ बैठकर बात करें। बेटियों को शिक्षा दें, बेटी भी घर की लक्ष्मी और अन्नपूर्णा होती है, इसलिए हमारा सभी से निवेदन हैं कि अपनी बेटी को आत्मनिर्भर बनाएं और उसकी शिक्षा पर ध्यान दें। पत्नी का सम्मान करें क्योंकि पत्नी को गृहलक्ष्मी और अन्नपूर्णा कहा जाता है, इसलिए पत्नी और बहू का भी सम्मान करें। उन्हें महसूस कराएं कि ससुराल उनका अपना घर है, जहां उनका पूरा अधिकार है। बहनों को सुरक्षा दें, हमारी बहनें और बेटियां घर की खुशी होती हैं, इसलिए बहन-बेटियों की सुरक्षा जरूरी है। बहन-बेटियों को सुरक्षा दें और उन्हें आत्मनिर्भर बनाएंगे। माताराणी सभी की मनोकामना पूर्ण करें।

उन्होंने आगे कहा, हमारी भारतीय परम्परा में नवरात्रि का आयोजन देवी के नौ स्वरूपों के माध्यम से शक्ति, ज्ञान तथा ऐश्वरय के तीन महत्वपूर्ण पक्षो को प्रगट करता हैं। आदिशक्ति जगत जननी जगदम्बा प्रतिमा और प्रति माँ में हैं। इसलिए हमारे समाज में देवी की प्रतीक महिलाओं के सम्मान के कार्यों को आगे बढ़ाएं, तो वे समाज में नई प्रेरणा बनेंगे। यह कार्य आधी आबादी को स्वावलम्बन की दिशा में आगे बढ़ा सकते हैं। यह समाज व हम सब की जिम्मेदारी है और नवरात्र भी हमें जीवन में इस बात की प्रेरणा देते है कि कोई भी कार्य असम्भव नहीं है, बस बेहतर प्रयास की आवश्यकता है और आज़ प्रत्येक क्षेत्र में सम्भावनाएं हैं। उन सम्भावनाओं को समय से चुनते हुए कार्य करेंगे तो सफलता अवश्य मिलेगी। यह सभी कार्य एक सुरक्षित वातावरण में ही सम्भव हैं।

अटल पार्क सैक्टर 2 बल्लबगढ़ में पूज्य महात्मा गांधी एवं पूज्य लाल बहादुर शास्त्री की जयंती के उपलक्ष्य में कार्यक्रम आयोजित किया गया

अखिल भारतीय मानव कल्याण ट्रस्ट द्वारा केन्द्र सरकार द्वारा देशभर में चलाए जा रहे (सेवा पखवाड़ा 17 सितंबर से 2 अक्टूबर) के अंतर्गत आज राष्ट्रपिता महात्मा गांधी एवं पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री जी की जयंती समारोह आयोजित अखिल भारतीय मानव कल्याण ट्रस्ट द्वारा किया गया

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी एवं पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित की गई और मिष्ठान वितरण किया गया तत्पश्चात स्वच्छता कार्यक्रम एवं एक पेड़ मां के नाम कार्यक्रम में ट्रस्ट के राष्ट्रिय अध्यक्ष डॉ एमपी सिंह और संस्थापक डॉ ह्रदयेश कुमार

महामंत्री महेश शर्मा द्वारा ट्रस्ट के कार्यकर्ताओं के साथ पौधारोपण किया राष्टीय अध्यक डॉ एमपी सिंह ने कहा की स्वच्छता अभियान को माननीय देश के यशस्वी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को सफ़ाई अभियान को चालाते हुए आज दस वर्ष सम्पूर्ण हुए हैं आज़ हमें देश में गौरवान्वित करने वाले प्रधानमंत्री जी के रूप में हमें काम करने का मौका मिला है ,हम अपने को गौरवशाली समझते हैं देश के सभी जगह आज स्वछता अभियान और वृक्षारोपण कार्य चल रहा है देश स्वछता अभियान लगातार चलता रहेगा

ट्रस्ट के संस्थापक डॉ ह्रदयेश कुमार ने कहा कि पर्यावरण की स्वच्छता आज़ हमारे जीवन के लिए अहम है पर्यावरण को बचाना व स्वच्छता समय समय पर चलते रहना चाहिए हमरा संकल्प होना चाहिए की हर व्यक्ति को स्वछता की ओर को कदम बढ़ाने की आवश्यकता है

संस्कारशाला : युवाओं के सशक्तिकरण के लिए माँ दुर्गा से जीवन पाठ

माँ दुर्गा, शक्ति और साहस की प्रतीक, हमें जीवन में कई महत्वपूर्ण पाठ सिखाती हैं। उनके नौ रूपों के माध्यम से, हम विभिन्न गुणों को आत्मसात कर सकते हैं जो हमारे जीवन को सफल और सशक्त बना सकते हैं, विशेष रूप से युवाओं के लिए, जो अपने भविष्य की दिशा तय कर रहे हैं।

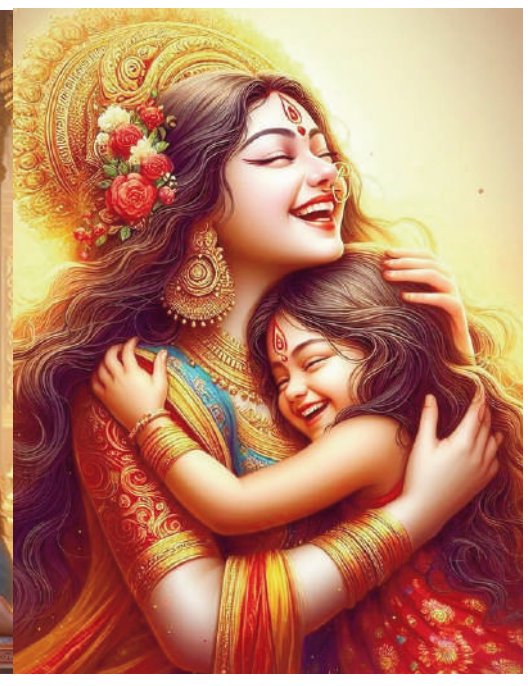

शक्ति और आत्मनिर्भरता का पाठ

माँ दुर्गा का पहला और सबसे महत्वपूर्ण संदेश है कि हमें अपनी शक्ति को पहचानना चाहिए। वह हमें सिखाती हैं कि आत्मनिर्भरता और आत्मविश्वास के साथ जीवन में चुनौतियों का सामना कैसे किया जाए। युवा पीढ़ी को यह समझने की जरूरत है कि अपनी क्षमताओं और शक्तियों पर विश्वास रखना सफलता की कुंजी है।

धैर्य और दृढ़ता

माँ दुर्गा का रूप हमें यह सिखाता है कि धैर्य और दृढ़ता से कठिनाइयों का सामना किया जा सकता है। आज के युवाओं के लिए यह जरूरी है कि वे जीवन में आने वाली हर चुनौती को धैर्यपूर्वक स्वीकार करें और निरंतर प्रयास करते रहें।

सत्य और न्याय का साथ

माँ दुर्गा हमेशा अन्याय के खिलाफ खड़ी रहती हैं और बुराई का नाश करती हैं। यह हमें सिखाता है कि जीवन में सत्य और न्याय का साथ कभी नहीं छोड़ना चाहिए। युवाओं को ईमानदारी और नीतियों का पालन करते हुए समाज में अपनी भूमिका निभानी चाहिए।

कर्म की महत्ता

माँ दुर्गा का रूप हमें कर्म की महत्ता का ज्ञान कराता है। कर्म के बिना जीवन में कुछ भी संभव नहीं है। युवाओं को यह समझने की जरूरत है कि निरंतर मेहनत और सही दिशा में किए गए प्रयास ही उन्हें सफलता के शिखर तक ले जा सकते हैं।

करुणा और दया

माँ दुर्गा हमें करुणा और दया का संदेश देती हैं। युवाओं के लिए यह महत्वपूर्ण है कि वे समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी को समझें और दूसरों की मदद करने के लिए हमेशा तत्पर रहें। सामाजिक सेवा और दूसरों के प्रति संवेदनशीलता से वे न केवल खुद को बेहतर बना सकते हैं, बल्कि समाज को भी बेहतर दिशा में ले जा सकते हैं।

साहस और निर्भीकता

माँ दुर्गा का प्रत्येक रूप साहस और निर्भीकता का प्रतीक है। जीवन में हमें कई बार डर का सामना करना पड़ता है, लेकिन माँ दुर्गा हमें सिखाती हैं कि साहस और निडरता से हम किसी भी चुनौती का सामना कर सकते हैं। युवाओं को आत्मविश्वास और निर्भीकता के साथ अपने सपनों का पीछा करना चाहिए।

आध्यात्मिकता का महत्व

माँ दुर्गा हमें यह भी सिखाती हैं कि जीवन में आध्यात्मिकता का महत्व कितना बड़ा है। केवल भौतिक सफलता ही पर्याप्त नहीं है; मानसिक और आध्यात्मिक शांति भी आवश्यक है। युवा पीढ़ी को ध्यान, योग, और आत्मचिंतन के माध्यम से अपनी आंतरिक शांति और संतुलन बनाए रखना चाहिए।

माँ दुर्गा के इन जीवन पाठों को अपने जीवन में अपनाकर, युवा पीढ़ी अपने भविष्य को बेहतर बना सकती है। वह न केवल व्यक्तिगत रूप से सफल होंगे, बल्कि समाज और राष्ट्र के निर्माण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकेंगे। माँ दुर्गा की शक्ति, साहस और करुणा हमारे जीवन को प्रेरित करें और हमें सशक्त बनाएं।

जय माता दी!

22.68 लाख का 113.84 ग्राम ब्राउन सुगर आदित्यपुर से जप्त , मां जेल में बेटा संभाल रहा था कारोबार

कार्तिक कुमार परिच्छा

सरायकेला, झारखंड में जमशेदपुर से सटा आदित्यपुर क्षेत्र अवैध मादक पदार्थ कारोबार का गढ़ बन चुका है, यहां सरायकेला के एस पी के निर्देशन में पुलिस ने 113 पुड़िया ब्राउन शूगर के साथ एक महिला और उसके साथी को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार किए गए व्यक्तियों में कुख्यात महिला ड्रग फेडरर डोली परवीन का बेटा शाहबाज खान उर्फ गुड्डू और आसुरन बीबी शामिल हैं।

गत बुधवार रात आदित्यपुर पुलिस को तलाशी के दौरान न 113.44 ग्राम ब्राउन शूगर और लगभग 1.50 लाख रुपये नकद बरामद किए। जिले के एस पी मुकेश लुनायत ने बताया कि डॉली परवीन के जेल जाने के बाद उसका बेटा शाहबाज अवैध कारोबार को संभालने लगा था । पुलिस को सूचना मिली थी कि क्षेत्र में ब्राउन शूगर का धंधा तेजी से चल रहा है। शाहबाज इस नशे की बिक्री करता था, जबकि आसुरन उसे छोटे-छोटे पुड़िया में पैक करने में मदद करती थी।

पुलिस अधीक्षक के अनुसार, पिछले दो महीनों में ब्राउन शूगर से संबंधित मामलों में 14 लोगों को गिरफ्तार किया गया है। इनमें कई ऐसे व्यक्ति भी शामिल हैं, जो पहले भी एनडीपीएस मामलों में जेल जा चुके हैं। इन पर पुलिस की नजर रखी जाएगी। एसपी लुणायत ने बताया कि डॉली परवीन के खिलाफ प्रिवेंशन ऑफ इलीसिट ट्रैफिक इन नारकोटिक्स ड्रग्स एंड साइकोट्रॉपिक सब्सटेंस एक्ट (एनडीपीएस एक्ट) के तहत कार्रवाई की तैयारी की जा रही है। यह एक्ट उन अपराधियों पर लागू होता है जो लगातार नशे के कारोबार में लिप्त पाए जाते हैं। इस एक्ट के तहत अपराधी को एक साल तक जमानत नहीं मिलती।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095 . newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी .आर .बी . एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। **RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023**